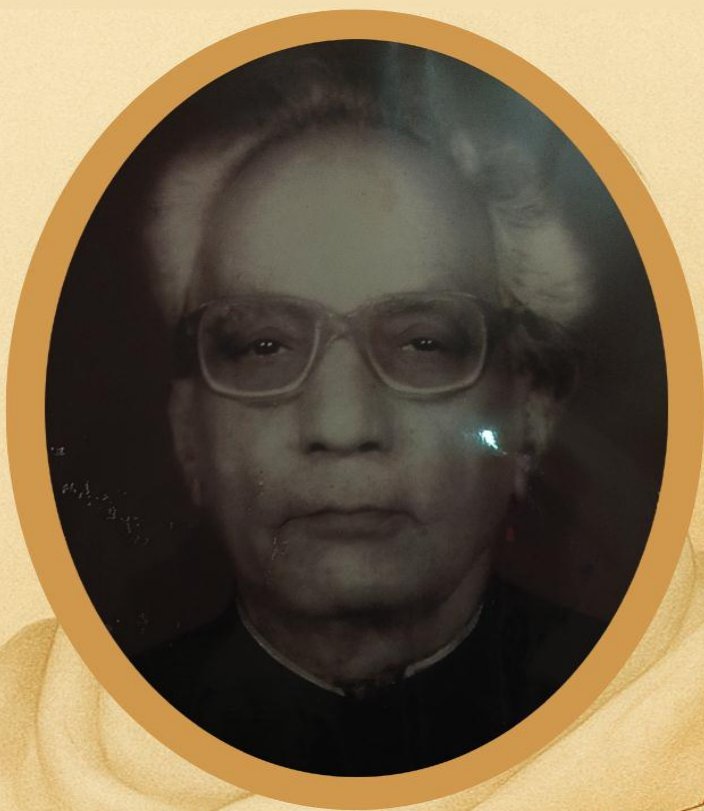


सम्पदा और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



लेखक – अंजनी कुमार उपाध्याय



સમ્પદા ન્યૂઝ ઓર આચાર્ય મહેન્દ્ર શાસ્ત્રી



સમ્પદા ન્યૂઝ ઓર મહેન્દ્ર શાસ્ત્રી



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



Title: SAMPADA AUR ACHARYA MAHENDRA SHASTRI

Author's name: ANJANI KUMAR UPADHYAY

Published by : MOTILAL WELFARE SEWA TRUST

Publisher's Address-

**MOTI BA NIWAS,
NANDANA WARD WEST
BARHAJ, DEORIA,
U.P. 274601**

Printer's Details-

**Faiz & Jaish Publishing Team
Nandana Pashchimi
Barhaj Deoria
U.P. 274601**

Edition Details - I st Edition

ISBN: 978-81-978583-0-7

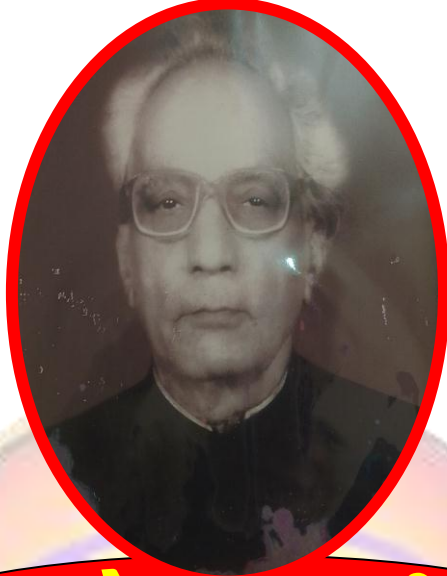
ISBN: 978-8-19785-830-7



Copyright © Motilal Welfare Sewa Trust



समर्पण



महेन्द्र शास्त्री

आपकी बहुमूल्य रचनाओं में से हमें कुछ रचनाएं प्राप्त हुई है । आपकी ये रचनाएँ आपके चरणों में समर्पित ।

- शंजनी कुमार उपाध्याय



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



लेखक परिचय

नाम — अंजनी कुमार उपाध्याय

जन्म — 16 जनवरी 1963

जन्म स्थान — बरहज, देवरिया, उत्तर प्रदेश

पिता का नाम — श्री मोती बीए

माता का नाम — श्रीमती लक्ष्मी देवी उपाध्याय ।

प्रारंभिक शिक्षा— श्रीकृष्ण इंटरमीडिएट कालेज आश्रम, बरहज, देवरिया ।

स्नातक — बुद्ध पोस्ट ग्रेजुएट कालेज कुशीनगर ।

पोस्ट ग्रेजुएट — हिंदी में फिरोज गांधी कालेज, रायबरेली,

मनोविज्ञान में परास्नातक, बुद्ध पोस्ट ग्रेजुएट कालेज कुशीनगर ।



- 1982 से लेकर के उन्नीस सौ अठ्ठासी तक राजकीय निर्माण कार्य में सहायक ।
- 1989 में संपदा का संपादन, नागार्जुन, डा क्षेमचंद सुमन, डाक्टर शंभू नाथ सिंह, त्रिलोचन शास्त्री, सत्येंद्र मिश्र, रामदरश मिश्र एवं पिता श्री मोती बीए के साथ प्रबन्ध संपादक का कार्य ।
- साथ ही साथ ज्योतिषाचार्य का भी कार्य ।
- अवैतनिक शिक्षक के रूप में शिक्षण कार्य, अग्रसेन इंटर कालेज लखनऊ, मदन मोहन मालवीय इंटरमीडिएट कालेज, गोरखपुर, सरोजनी कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बरहज, श्री कृष्ण इंटरमीडिएट कालेज आश्रम, बरहज, देवरिया में अध्यापन, विश्वनाथ त्रिपाठी शिक्षण संस्थान बरहज, सेंट जेवियर्स कालेज बरहज, प्रधानाचार्य में अध्यापन, बाबा बैद्यनाथ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जिगनी सोहौली, देवरिया में 2009—2010 में प्रधानाचार्य, वर्तमान में एचपीजीडी चिल्ड्रेन अकादमी बरहज में अध्यापन कार्य ।
- श्री मोती बीए के साथ फिल्मों में निर्माण कार्य — ठकुराइन, चंपा चमेली और गजब भईले रामा में फिल्म निर्माता के पी शुक्ला, राकेश पांडे, सुजीत कुमार, पद्मा खन्ना, रवीन्द्र जैन के साथ कला और संस्कृति पर कार्य । श्री मोती बीए की फिल्म मातृमंदिर, 'प्रेम के बँसुरिया' और 'प्रेम प्रेम है' के निर्माण कार्य के लिये कार्य ।
- श्री मोती बीए वेलफेयर सोसाइटी द्वारा पुस्तक के प्रकाशन में सहयोग और उपाध्यक्ष के पद पर कार्यरत ।
- श्री मोतीलाल वेलफेयर सेवा ट्रस्ट के ट्रस्टी ।
- जवाहर प्रकाशन बरहज देवरिया के स्थापना में बहुमूल्य योगदान तथा उसके पदाधिकारी ।



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



- श्री मोती बीए पुस्तकालय के अध्यक्ष ।
- श्री मोती बीए द्वारा स्थापित संपदा न्यूज के संचालक एवम संपादक प्रमुख । संपदा न्यूज चौनल के एडिटर इन चीफ । रेडियो मोती के प्रमुख डायरेक्टर ।
- पत्रकारिता में, “जुलूम से जंग, हम वतन, न्यूज एक्सप्रेस चौनल में प्रमुख रूप से रिपोर्टिंग, महाखबर, स्वतंत्र चेतना एवं अन्य दैनिक समाचार पत्र” में भी सक्रिय पत्रकारिता ।
- स्वतंत्र रूप से लेखन कार्य । कविता, कहानी, आलोचना, समालोचना, निबंध, संस्मरण,
- ऐतिहासिकता और धार्मिक स्थलों के खोज पर विस्तृत रिपोर्ट ।
- संपदा न्यूज के वेबसाइट के ओनर । श्री मोती बीए के समस्त फिल्मों और गीतों के संकलन कर्ता ।
- संपदा के वेबसाइट पर श्री मोती बीए की पुस्तकों के प्रकाशनकर्ता ।

प्रमुख रचनाएं—

1. समाचार पत्रों की नजरो में मोती बीए (भाग-01)
2. आत्मकथा—मोती बीए (भाग-01)
3. आत्मकथा—मोती बीए (भाग-02)
4. सरयू से सागर तक (भाग-01) मोती बीए के फिल्मी गीतों और फिल्मों का संकलन, वो गीत जो फिल्मों में आए और उनके नाम नहीं लिखे गए, मोती बीए के चोरी गए फिल्मों के गीत ।
5. आपका मोती — मोती बीए को लिखे गए 151 पत्र
6. उड़ती हुई साधना और बैठे हुए सन्यासी
7. सम्पदा न्यूज और जनार्दन पाण्डेय अनुरागी
8. सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री
9. सम्पदा न्यूज और डॉ. परमानन्द उपाध्याय

निवास — श्री मोती बीए निवास, नंदना पश्चिमी, बरहज, देवरिया, उत्तर प्रदेश 274601



आचार्य महेन्द्र
शास्त्री जी
का निवास



भूमिका

अधिक समय नहीं गुजरे कि देश में श्री राम कथा का धनकरण हो गया । श्री राम कथा जब वाल्मीकि ने रामायण के रूप में लिखी थी तो इसपर संस्कृत के विद्वानों का एकाधिकार था। जब मुगल शासन के समय में, अकबर के शासनकाल में इसे तुलसीदास ने अवधी भाषा में प्रस्तुत किया तो संस्कृत के विद्वानों द्वारा घोर विरोध किया गया, लेकिन समय के साथ घर में जब रामचरितमानस पूजा जाने लगा तो धर्म और धन का तारतम्य उस समय समाप्त हो गया।

उस समय बड़े बड़े मानस कथा वाचक आये और श्री राम चरित मानस की कथा को जन जन के हृदय में स्थापित कर दिए। अब तो श्री रामचरितमानस की कथा रु. 100000 से लेकर करोड़ों में कथा वाचक कह रहे हैं। आज के परिवेश से दूर जब राम कथा प्रेमी अपना सब कुछ श्री राम को समर्पित रहे थे, इसी समय में जब देश गुलामी से निकाल करके आजादी के सुंदर दिनों में प्रवेश कर रहा था, कुछ ऐसे राम कथा वाचक हुए जिनमें शब्द ब्रह्म होते थे, उनका तेज देव सदिश होता था और धनराशि जो भी मिल जाए, प्रभु का प्रसाद समझ कर ग्रहण कर लेते थे । उस समय वह समर्पित संत पूरे भारत सहित विश्व के हिंदू सनातन धर्मावलम्बियों के बीच आलोचित हो चुके थे।

इसी में एक मानस कथा वाचक सूर्य का नाम, आश्रम बरहज के, श्री कृष्णा इंटर कॉलेज के संस्कृत के प्रवक्ता, श्रीरामचरितमानस के प्रकांड विद्वान , आचार्य महेंद्र शास्त्री जी का है। एस के इंटर कॉलेज आश्रम बरहज में अध्यापन करने के साथ-साथ इनके देखरेख में दो महत्वपूर्ण कार्य और हुए। वे दोनों कार्य आज तक इनके रहने न रहने पर भी अनवरत चलते रहते हैं । पहले तो अनंत महाप्रभु के जयंती का समारोह और दूसरा श्री कृष्णा इंटरमीडिएट कॉलेज आश्रम बरहज देवरिया में होने वाला धर्म घंटा। अनंत महाप्रभु के जयंती समारोह को संभवत सत्यव्रत जी के कार्यकाल में प्रारंभ किया गया जिसमें आचार्य महेंद्र जी शास्त्री जी का विशेष योगदान रहा है । जब तक यह रहे आश्रम में मानस कथा का आयोजन इनकी देखरेख में होता रहा। देश के कोने-कोने से एक से बढ़कर एक कथा वाचक, राम कथा में पारंगत महान वेदांती और संत ऋषियों का आगमन होता रहा। यह कहना मुश्किल है कि आश्रम में कौन नहीं आया है। लगभग सभी आए हैं और सबका कार्यक्रम आचार्य महेंद्र शास्त्री से जुड़ा हुआ रहा है । उनका नाम भारत के कोने कोने में होने वाले राम कथा में चर्चित रहा है । यह भारत के सुदूर गांवों में शहरों में और यहां तक की भारत के बाहर भी कई देशों में राम कथा के लिए जाने जाते रहे हैं। आचार्य महेंद्र शास्त्री की तमाम कथाएं प्रचलित हैं । इतना तो हमें मालूम है कि जब यह मंच पर चढ़ते थे तो इनकी मधुर वाणी को सुनने के लिए नगर का हर व्यक्ति उम्र पड़ता था। आज भी कोई ऐसा बुजुर्ग नहीं जिससे पूछा जाए कि आचार्य महेंद्र शास्त्री को आपने सुना है,



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



तो वह आदमी इंकार करें, वह शान से अपना मस्तक उनके चरणों में झुका देता है और कहता है कि ऐसा कथावाचक दुनिया में मिलना मुश्किल है ।

महेन्द्र शास्त्री जी ने कुछ अच्छे संस्मरण लिखे हैं और महेन्द्र शास्त्री जी ने कुछ बड़े कार्य भी किए हैं लेकिन वह सब बातें आज लोगों द्वारा भूलती जा रही है। लोगों के स्मरण से उतरती जा रही हैं। संपदा न्यूज ने यह तय किया है कि वह इसे एक बार आपके सामने लाएगा। कारण यह की संपदा न्यूज के संपादक अंजनी कुमार उपाध्याय पर आचार्य महेन्द्र शास्त्री जी का बड़ा आशीर्वाद रहा है। वह बहुत ही हमें मानते थे। संभवत आज जो हमें ऊर्जा मिली है उसके एक कारण आचार्य महेन्द्र शास्त्री जी भी है। आचार्य महेन्द्र शास्त्री जी की जीवन में ऐसे तमाम उनके संस्मरण है जिसको आज हम इस पुस्तक के द्वारा संपदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री के नाम से प्रस्तुत कर रहे हैं। एक छोटा सा परिचय आपको आचार्य मेरे शास्त्री जी के बारे में हम देना जरूर चाहेंगे। आचार्य महेन्द्र शास्त्री जी के पिता का नाम श्री शिव बालक पांडे था। यह लमहर बलिया के मूल निवासी थे। बाबा राघवदास जी के संपर्क में आने के बाद यह आश्रम बरहज में आए थे। उन्होंने स्वर्गीय श्री करपात्री जी महाराज के साथ धर्म प्रचार का कार्य भी किया था और परम सिद्ध संत स्वामी सत्यव्रत जी महाराज के यह शिष्य रहे हैं। ऐसा कहा जाता है कि आचार्य महेन्द्र जी शास्त्री को रामचरितमानस और गीता पूरा कंठस्थ था। यह रोज धर्म घंटा में गीता का श्लोक सुनाते थे। सुंदरकांड का पाठ करते थे। हनुमान चालीसा और संकट मोचन का पाठ करते थे। यह अपने ही नहीं बल्कि सारे बच्चों के बीच कराया जाता था। बच्चों में जो धार्मिक भावनाएं भरी होती थी और श्रद्धा रहता था उससे वो अपने परिवार के बीच और समाज के बीच जो सम्मान पाते थे इसका श्रेय आचार्य महेन्द्र शास्त्री जी का धर्म घंटा था। यह प्रक्रिया कई वर्षों तक जब तक चलता रहा। उनके न रहने के बाद भी उनके शिष्यों ने चलाने का इसका सफल प्रयास किया, लेकिन जब वो अवकाश प्राप्त हो गए तो इसमें बाधा आना शुरू हो गया। धर्म घंटा उनके शिष्य श्री रविदेव पांडेय जी, श्री ब्रजराज उपाध्याय जी, श्री परशुराम पांडेय जी द्वारा वर्षों से अनवरत चलाई जा रही है।

श्री कृष्णा इंटर कॉलेज बरहज में कई विद्वान लोगों के साथ इनका सत्संग हुआ करता था और साथ ही शैक्षिक कार्य भी किया करते थे। विद्यालय से पत्रिका निकलती थी उसमें इनके लेख भी आया करते थे। ये स्वामी करपात्री जी महाराज के साथ धर्म प्रचार भी किये। इनके चार पुत्र और दो पुत्रिया हैं। प्रथम पुत्र श्री रमाशंकर पांडे जी जो शिक्षा विभाग में शिक्षा अधीक्षक थे, गोरखपुर में दूसरे पुत्र श्री विजय शंकर पांडे जो इंडियन डिफेंस अकाउंट सर्विस में क्लास वन के अधिकारी थे, तीसरे पुत्र श्री अक्षय कुमार पांडे थे जो चीफ इंजीनियर रहे हैं, चौथे श्री संतोष कुमार पांडे जो बीएससी ऑनर्स, एल एल बी, एल एल एम बीएचयू, भूतपूर्व प्रोफेसर ऑफ ला आगरा कॉलेज, उत्तर प्रदेश उच्च न्यायिक सेवा में न्यायाधीश रहे। श्री संतोष



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री

कुमार पांडे जी के दामाद भी जज हैं, उनका नाम अवनीश कुमार पांडे है वर्तमान में उच्च न्यायालय हाई कोर्ट लखनऊ में रजिस्ट्रार के पद पर है।

- श्रंजनी कुमार उपाध्याय

निवास-

श्री मोती बीए निवास, नन्दना पश्चिमी, बरहज,
देवरिया, उत्तर प्रदेश 274601

www.sampadanews24.blogspot.com

www.facebook.com/anjaniupadhyay

www.pinterest.com/sampadanews

www.x.com/anjanikumarupadhyay

www.linkedin.com/anjaniupadhyay

email-editorsampadanews@gmail.com

Mob.No.8299015136



महेन्द्र शास्त्री



महेन्द्र शास्त्री की धर्मपत्नी



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



। श्री: हरि: ॥

आत्म निवेदनम्

॥ श्री राघवेन्द्रोविजयतेतनाम् ॥

सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये ।

सत्यस्य सत्यामृत सत्यनेत्रं सत्यात्मकं त्यांशरणं प्रपद्ये ॥

श्रीपरमहंस मुनयेनमः

श्री रामराज्य के प्रबल समर्थक परम तपस्वी वीतराग परब्रह्मज्ञानी सत्यसनातनधर्म मर्यादा के प्रतिष्ठापक एवं सदा सदाचरण सद्ब्यवहार शाली, प्राणिमात्र के कल्याण के लिए सुसमर्पित सम्पूर्ण जीवन श्रीसत्यव्रत जी महाराज परमहंस परम योगी पुरुष के आजीवन धर्मप्रिय किया कलापों, सदगुणों, का वर्णन करना सम्भव नहीं है। वे महर्षि प्रत्यक्ष परोक्ष रूप में कितने शास्त्र मर्यादानुकूल सभी के मंगलार्थ सत्कर्म किये हैं इनका वर्णन करना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है वे भाषण प्रवचन के पहले आचरण करने में ज्यादा विश्वास रखते थे किसी प्रसंग व उद्देश्य को ध्यान में रखकर ही सन्तुलित एवं पूर्ण शास्त्र सम्मत सत्यवचन का ही प्रयोग करते थे। सत्यव्यवहार का आचरण करते थे इसीलिए वे वस्तुतः सत्यव्रत थे। जो भी शुभ संकल्प करते थे उसे अवश्य पूर्ण करते थे। भगवान् तथा भगवान् के भक्तों में शास्त्रों में सत्यव्रत पालन में उनकी स्वाभाविक श्रद्धा पूर्ण निष्ठा थी।

इतना अटूट-अनुपम उत्तमोत्तम भाव पूर्ण ईश्वर में विश्वास था कि उनकी हर इच्छायें प्रायः सत्य सिद्ध होती देखी गयी हैं। अनेक लोगों की ग्रह-भूतप्रेत बाधा भी भगवान् श्रीराम नाम का उच्चारण कर कराकर, कीर्तन कराकर, पूर्णतः निवारण कराने में समर्थ थे। अनेक घटनायें प्रत्यक्ष हो चुकी हैं। आशीर्वचन जल्दी देते नहीं थे भगवान् के नाम जप करने को ही उपदेश देते थे। विशेष आग्रह करने पर किसी सन्तप्त प्राणी को यदि स्वस्थ होने का वचन दे देते थे तो वह स्वस्थ हो ही जाता था। यह विशेष चमत्कार उनकी तपस्या व सत्यव्रत का ही नामतः अर्थतः प्रभाव का था। इसीलिए श्री महाराज जी का नाम सत्यव्रत चरितार्थ था। अनेक अनुयायी अनेक विद्वान व सन्त उनके साथ रहने व उनके अनुसार आचरण करने में अपना अहोभाग्य समझते थे। अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैर त्यागः यह योग शास्त्र का वचन उनके जीवन में पूर्ण चरितार्थ देखा गया है। जन्म भूमि ग्राम नरहर पुर बुढ़नपुरा गोरखपुर में अनेक ब्राह्मण परिवार आपस में जमीन आदि के सन्दर्भ में मरने कटने को तैयार थे महाराज सत्यव्रत जी के आते ही शत्रुत्व भाव समाप्त कर उनके सामने मैत्री भाव में रहने का संकल्प भी ले लिए। झगड़ना बन्द कर दिये जो भी जमीन जाजात के प्रति स्वार्थ भावना से कलह था। पं० श्री रामनारायण जी आचार्य जो श्री महाराज सत्यव्रत जी के कुल के मान्य है तथा श्री महाराज जी के परम भक्त भी हैं उन्होंने एक बार एक अद्भुत घटना सुनायी थी उसका उल्लेख करते समय रोमांच हो जाता है। कविवर कालिदास ने 'ऊनं न सत्त्वेष्वधिको ववाघे' बलवान् प्राणी निर्वल प्राणी को पीड़ा नहीं पहुँचाता था का वर्णन अपने प्रसिद्ध महाकाव्यम् रघुवंश में किया है श्री वाण भट्ट ने भी आश्रम वर्णन करते समय सर्प को मयूर के पंख में निःशंक प्रवेश करने का वर्णन किया है, उसी को श्री महाराज जी ने एकवार जनता के सामने प्रत्यक्ष दिखा दिया था। बडहलगंज में आर्य समाजियों की सभा थी। सनातन धर्म का स्वयं पक्ष-विपक्ष लेकर आर्य समाजी सनातन धर्मी



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



बनकर स्वयं कोई दूसरा आर्य समाजी बन कर घोर निन्दा एवं सनातनी को पराजित करने का अनेक बार नाटक कर समाज में आर्य समाज की झूठी विजय पताका फहराने का ढोंग करते रहे। किसी ने महाराज श्री सत्यव्रत जी को बुढ़नपुरा आया सुनकर या बरहज बाजार में आश्रम से बुलाकर आर्य समाज शास्त्रार्थ सभा में उनको लाया, शास्त्रार्थ शुरू होते ही महाराज सत्यव्रत जी ने आर्य समाजियों की ही युक्ति व वचन से सद्यः उनको चुप कर दिया। आर्य समाजी किसी षड्यन्त्र से सम्भवतः अपनी योजना बनाये थे एक सर्प जो विशैला टोकरी में बन्द था बाहर कर श्री सत्यव्रत जी के तरफ ही टोकरी का मुख खोल कर उनकी हिंसा करने का खेल किया भगवान् की कृपा अद्भुत हुयी एकाएक कहीं से एक बलवान् न्योला प्रकट हो गया। दोनों में युद्ध होने लगा सर्प भी बड़ा बलवान् था पर न्योला उसे दबोचने लगा तो महाराज सत्यव्रत जी बोल उठे अरे नकुल भाई नागराज आर्य समाजी नहीं है उन्हें छोड़ दो, मैं आर्य समाजी बन्धुओं को अपना परम मित्र व हितैषी मानता हूँ।

न्योला सर्प को छोड़कर महाराज की तरफ देखने लगा। सर्प अवसर पाकर न्योला पर झपटा तो महाराज नै कहा नहि नहि नागराज यह दगाबाजी है विश्वास घात है। ऐसा नहीं होना चाहिए। नाग भी शान्त होकर न्योला के सामने साष्टांग दण्डवत् की तरह लोट गया न्योला उसके पीठ पर मानो धीरे-धीरे चलकर प्यार से अपने द्वारा किये हुये घाव पर उसे सहलाते हुए मित्रता करने लगा। दोनों एक दूसरे से जैसे दो दो सर्प या दो न्योले आपस में मिलते हो का दृश्य प्रकट हो गया। यह सब चमत्कार श्रीसत्यव्रत जी महाराज का था। सभी जनता सत्यव्रत जी महाराज की जय जय करने लगी। आर्य समाजी प्रायः सभी सनातन धर्मीबन गये। सत्यव्रत जी को गुरुवत् मानकर उनसे सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार करने का संकल्प लेकर विदा हुये।

एक बार सरयू जी में स्नान कर सन्ध्या करते हुये महाराज के सिर पर कोई पक्षी बैठ गया तट पर अन्य लोग देखकर प्रयास किये उड़ाने का कि विट न कर देवे। महाराज ने हाथ हिलाकर मनाकर दिया। क्या था सन्ध्या वन्दन करने के बाद पक्षी अपने आप स्वयं चला गया। यह सब सात्विक व अहिंसाव्रत का ही सत्य प्रभाव था। कि पशु- पक्षी सर्प आदि वैर भाव भूलकर मित्र बन गए।

उस घटना का उस समय ऐसा प्रचार हुआ कि बहुत दिनों तक लोग श्री महाराज जी से बार-बार पूँछते थे कि श्री महाराज वे दोनों साँप और नेवले कहाँ से आए थे और कहाँ गए। श्री महाराज जी सबको यही कहकर शान्त कर देते थे कि सब भगवान् की कृपा है। ऐसी ही अनेक घटनाओं को सुनकर मेरे मन में कुछ लिखने की इच्छा प्रबल हो गई। मैं लेखन कला में पूर्णतः अक्षम हूँ इस बात को ध्यान में रखकर अपने जीवन में कभी मैं लिखने का साहस ही नहीं कर सका। आज जब मैं ८५ वर्ष का हो गया हूँ नेत्र से कम देख पाता हूँ लिखने में हाथ भी पूरा साथ नहीं दे रहा है उस समय एक महान् संत की चर्चा करने का लोभ संवरण नहीं सका जिसने मुझे पुत्रवत् पाला और शिष्यवत् पोसा। लिखने में उनका ही पावन आशीर्वाद संवल प्रदान करता रहा इसका ध्यान रखकर ही पाठ करने पर आप लोगों को पूर्ण लाभ होगा।

महेन्द्र शास्त्री

श्रीपरमहंस आश्रम बरहज बाजार, देवरिया (उ०प्र०)



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



॥ श्री गणेशाय नमः ॥
श्री जानकी वल्लभो विजयते

परमहंस श्री सत्यव्रत जी महाराज
॥ स्मृति संग्रहः ॥

रामाय राम भद्राय राम चन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥
अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनं ।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम् ॥
वन्दे बोधभयं नित्यं गुरुं शङ्कर रूपिणम् ।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्दः सर्वत्र वन्द्यते ॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥
अनन्तं, राघवं, वन्दे सत्यव्रत परायणम् ।
राजारामं नमस्कृत्य गुरोर्गाथां करोम्यहम् ॥



भगवान् की असीम अनुकम्पा का बार-बार स्मरण करके मैं पूज्य गुरुदेव का कुछ संस्मरण लिखने का साहस कर रहा हूँ। पूज्य गुरुदेव का सारा जीवन अनेक ऐसी घटनाओं से भरपूर है, जिसके स्मरण मात्र से रोमांच हो जाता है। उसी क्रम में एक घटना का वर्णन करता हूँ।

पूज्य गुरुदेव अखिल भरतवर्षीय भी रूपकला हरिनाम यश संकीर्तन सम्मेलन में भाग लेने श्री चित्रकूट धाम पहुँचे। उनके साथ कई लोग थे जिनमें मुख्य उस समय के श्री कृष्ण इण्टर कालेज के प्रधानाचार्य श्री चन्द्रिका प्रसाद वर्मा थे। पूज्य गुरुदेव नियमानुसार तत्कालीन सभापति श्री वेदान्ती जी महाराज से अगला अधिवेशन वरहज में करने का आग्रह किये। श्री वेदान्ती जी ने बड़े प्रेम से आग्रह स्वीकार करके श्री गुरुदेव से इतना कहा कि इसमें व्यय बहुत होता है इसका ध्यान रखियेगा। उस समय सम्मेलन में लगभग 50,000 (पचास हजार) द्रव्य लग जाते थे। सम्मेलन के सेक्रेटरी बलदेव बाबू वड़े सावधान पुरुष थे। वे रूपये पैसे के सम्बन्ध में किसी की बात नहीं सुनते थे। उन्होंने एक पत्र श्री गुरुदेव के पास भेजा कि यदि आपने 5000 तत्काल नहीं भेजा तो आपका निमन्त्रण निरस्त कर दिया जायेगा। उस समय 5000 रु० की रकम वरहज आश्रम के लिए दूर की बात थी परन्तु गुरुदेव उससे विचलित नहीं हुवे उन्होंने अपने लोगों से राय की सबकी राय हुई कि चन्दा मांगने की व्यवस्था की जाय। श्री महाराज जी इच्छा न रहते हुवे भी एक दिन कुछ लोगों को साथ ले कर चन्दा मांगने चले। साथ में मैं भी था। उनके साथ हम भगवान् का स्मरण करते बहुत धीरे-धीरे चल रहे थे, ऐसा लगता था कि वे बड़े ही उदास हैं मैंने महाराज जी का मन बहलाने के लिए कहा महाराज जी यात्रा बड़ी शुभ है वह देखें सामने से एक ग्वाला दही लेकर आ रहा है श्री महाराज जी ग्वाला को देख कर बहुत प्रसन्न हुवे, परन्तु एक सज्जन ने कहा देखना ही नहीं खाना भी चाहिए। मुझे बड़ा दुख हुआ मैंने सोचा यह तो दही बेंचकर लौट रहा है, इसके पास दही कैसे होगी। मैंने कहा क्यों ग्वाला भाई



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



तुम्हारे पास दही है, उसने कहा हाँ थोड़ी सी है मैंने कहा दही दे दो सबलोग हाथ में लेकर थोड़ा-थोड़ा दही खाये। गुरुदेव ने कहा पैसा दे दो ग्वाला बोला बाबा एक पैसे की दही सब लोग खाये हैं। कैसा पैसा गुरुदेव ने कहा 1 आना पैसा दे दो। ग्वाला बोला बाबा हमारी दही 1 पैसे की थी उससे अधिक नहीं लूँगा। बाबा बोले ले लो तुमने बढ़ा 'काम किया है। हम लोग चन्दा मांगने जा रहे हैं तुमने हमारी यात्रा शुभ बना दी है।

ग्वाला बोला तो बाबा हमारी ओर से एक आना चन्दा में लीजिए, बाबा ग्वाला की बात सुनकर रो पड़े और बोले महेन्द्र ! चन्दा हो गया इस एकन्त्री को सोने से मढ़वा कर उस पर राम नाम लिखवा कर लावो। पं० विजयनाथ जी को यह काम सौंपा गया उसपर राम लिखकर लाया गया अब वह एकन्नी कहाँ है, मुझको ज्ञात नहीं है उस एकन्नी को गुरुदेव जैसा समझते थे उसका प्रत्यक्ष फल उस समय प्रकट हुआ जब अखिल भारत वर्षीय श्री रूप कलाहरिनाम यश संकीर्तन सम्मेलन बिना किसी से चन्दा माँगे पूर्ण हो गया। प्रातः काल श्री गुरुदेव हमसे कहे चन्दा का काम भगवान् ने पूरा कर दिया अब प्रेम से नाम जप हो, और उस दिन उनसे जो मिलने आता था, उससे यही कहते थे कि पूर्ण विश्वास के साथ आप लोग श्रीराम जय राम जय राम महामंत्र का जप इस संकल्प से करें कि भगवान् इस यज्ञ को पूर्ण करें, भगवान् भक्तों की रुचि अवश्य पूर्ण करते हैं, रामायण में स्पष्ट लिखा है— राम सदा सेवक रुचि राखी वेद पुराण सन्त सुर साक्षी।

गुरुदेव की प्रेरणा से हम सभी लोग श्री राम जय राम जय जय राम का जप करने लगे। सम्मेलन के प्रचार मंत्री इसी बीच भागलपुर से हृदय मारायण जी आचारी जी अपनी कीर्तन मण्डली के साथ वरहज आ पहुँचे श्री आचारी जी बड़े उच्च कोटि के साधक थे। उनकी मण्डली के लोग भी अत्यन्त भावुक और राम नाम प्रेमी थे। उनका कई कार्यक्रम वरहज-गौरा में हुवा। देहात में भी उनके कार्यक्रम हुवे पूरा वातावरण राम मय हो गया सब लोग सामूहिक रूप से प्रतिदिन श्री राम जय राम जय जय राम का जप करने के बाद सम्मेलन की सफलता की प्रार्थना करते थे। कुछ लोग हंसी से यह भी कहते थे कि देखें क्या होता है।

रुपया देने का समय पास आ गया पूज्य महाराज जी ने कहा कि आज कीर्तन देवरिया में होगा। पूज्य महाराज जी के आदेश से प्रमासखी के नेतृत्व में एक कीर्तन मण्डली आश्रम में भी बन गई थी पूज्य श्री महाराज जी उसी मण्डली को लेकर देवरिया पहुँचे। रात में बड़ी देर बक भगवान् का नाम कीर्तन हुवा प्रातः काल सूर्योदय के समय समय बाबू मोहन लाल मारवाडी वहाँ पहुँचे जहाँ हम लोग ठहरे थे। पूज्य श्री महाराज जी कमरे में थे बाहर मैं ही था भाई मोहन ने हमसे पूछा श्री महाराज जी कहाँ है, मैंने कहा वे प्रातःकाल संस्कृत बोलते हैं, प्रातःकाल आपको समझने में कठिनाई होगी। सायंकाल आइयेगा, उन्होंने कहा केवल दर्शन करना है आप श्री महाराज जी को सूचना दे दें। मैंने श्री महाराज जी से निवेदन किया कि एक सज्जन अभी मिलना चाहते हैं, महाराज जी ने संकेत से उनको आने की आज्ञा प्रदान कर दी। श्री मोहन जी बड़े प्रेम से श्री महाराज जी के चरण पकड़ कर बोले महाराज आज रात में मुझे स्वप्न में ऐसा आदेश हुवा है, कि मैं आपको 5000 पहुँचा दूँ। आपकी क्या आज्ञा है, मुझे आज ही बाहर जाना है आज्ञा हो तो रुपया यहीं लाऊँ, या यूथाराम के यहाँ जमा कर दूँ?

श्री महाराज ने कहा आप बारह बजे के बाद आयें मोहन जी ने कहा ठीक है, मैं बारह बजे आऊँगा। लेकिन रुपया तो मैं अभी यूथाराम जी के यहाँ जमा कर दूँगा। बारह बजे के बाद श्री महाराज जी हिन्दी बोलते थे इसी से उनको उसी समय बुलाया गया। आने के बाद श्री महाराज जी ने पूछा आपका रुपया मैं कैसे लूँ वे बोले क्यों? महाराज जी ने



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



कहा आप ये रुपये हमको ऋण के रूप में दे रहे हैं, तो ले लूँ वे बोले नहीं महाराज ये रुपये तो मैं दान में दे रहा हूँ। श्री महाराज जी ने हँसते हुये कहा भैया दान भी मैं केवल अपने चेलों से ही लेता हूँ। श्री मोहन ने कहा तो ठीक है, मैं भी अभी चेला नहीं बना हूँ आप हमको अपना चेला बना लें। मोहन ने हमसे पूछा क्यों भाई आपके यहाँ चेला बनाने में क्या लगता है मैंने कहा थोड़ा फूल, बतासा देकर आप आवें यहाँ कोई बिस्तार नहीं होता है।

शाम को भाई मोहन बड़े प्रसन्न मन से काफी मिठाई और कपड़े लेकर आए। मोहन भाई शिष्य हुवे हमारी मण्डली के लोगों ने कीर्तन किया और प्रसन्नता पूर्वक श्री महाराज जी मोहन का 5000 स्वीकार करके इसको कल ही पटना भेज दो रुपया पटना भेज दिया गया और पटना से सम्मेलन की पुनः स्वीकृति मिल गई। यह रही उस एकन्नी की पहली कथा जो सोने में मढ़कर श्री महाराज जी के पास थी। अब आगे उस एकन्नी की कथा प्रारम्भ होती है।

श्री रूपकला हरिनाम यश संकीर्तन सम्मेलन उस समय युवा अवस्था में था उसके कार्यकर्ता बड़े ही प्रेमी और उत्साही लोग थे देश गुलाम था। अंग्रेज उस समय अपने आतंक को इतना बढ़ा दिए थे कि कोई काम उनकी आज्ञा के बिना होना असंभव था। हमारा आश्रम उस समय कांग्रेस का गढ़ बन चुका था सभी देश प्रेमी आश्रम में आते जाते रहते थे। जब लोगों को पता चला कि रुपया जमा हो गया और आश्रम में बड़े जोरों से तैयारी हो रही है तो कुछ लोगों ने यह प्रचार शुरू कर दिया कि यह सरकार विरोधी कार्य है, और स्थानीय शासकों से आग्रह करने लगे कि किसी प्रकार सम्मेलन न हो। जब यह बात बलदेव बाबू को ज्ञात हुयी तो उन्होंने बिहार के गवर्नर महोदय से सारी बातें बतायी बलदेव बाबू बिहार सचिवालय में ऊँचे पद पर थे उनकी बातों का विश्वास करके गवर्नर महोदय ने यू०पी० सरकार को विश्वास दिलाया कि यह शुद्ध धार्मिक संस्था है इसका राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है। अब सारी बाधाएँ दूर हो गई और कार्य प्रारम्भ हो गया। काम बहुत बड़ा था। उस समय बहुत मण्डलियों उसमें भाग लेती थी हर मण्डली में 10 से 15 लोग रहते थे। उनके रहने और भोजन का प्रबन्ध सम्मेलन कराने वाले लोग करते थे।

यह पहला अवसर था जब वरहज जैसे छोटे स्थान पर यह सम्मेलन हो रहा था। उस समय आश्रम के केवल श्रीकृष्ण इण्टर कालेज के ७ कमरे बने थे पाठशाला थी, और छात्रावास था। इसमें इतने लोगों को ठहरना अत्यन्त कठिन था। श्रीमहाराज जी ने उस समय वनवारी गोड़िया को बुलाया उन्होंने कहा आप चिन्ता न करें मैं सारी मण्डलियों के रहने का प्रबन्ध कर दूँगा और उन्होंने पूरे आश्रम के मैदान में दक्षिण और पूरब का भाग झोपड़ियों से भर दिया बड़ा रमणीक निर्माण हुवा। एक बड़ा ही गव्य विवाह मण्डप बना ओर सारा मैदान उस समय जापान से आने वाले आम छाप कपड़े से आच्छादित कर दिया गया पाण्डाल इतना बड़ा और भव्य बना कि जब उसको उस समय के सभापति श्री 108 राम पदार्थदास जी वेदान्ती ने देखा तो कहा वाह यह तो सचमुच जनकपुर बन गया है।

सम्मेलन का कार्य अत्यन्त प्रभावशाली होता था। रंगबिरंगी पोशाकों में मण्डलियाँ चलती थीं तो बड़ा सुहावना मालूम होता था तीन दिनों तक अखण्ड संकीर्तन के पाण्डाल में जय सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम की ध्वनि गूँजती रही। भगवान् श्री राम के विवाह की शोभायात्रा तो इतनी विशाल थी कि आश्रम से सरयू तटतक हाथियों घोड़ों और मण्डलियों तथा वाद्य और गायन के साथ वरहज और देवरिया के कई वैण्ड बाजों के एक साथ बजने से अत्यन्त शोभा हुई। सारा कार्य अलौकिक था। भोजन का प्रबन्ध सम्मेलन में



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



मण्डली के लोग करते थे जो श्री अयोध्या से अपना पूरा दल लेकर चलते थे, हजारों आदमी को हर प्रकार का भोजन देना उनके लिए बड़ा ही आसान था देखने वाले लोग उनकी व्यवस्था देखकर आश्चर्य करते थे। शिष्य होने के बाद मोहन बाबू ने श्री गुरुदेव से कहा कि महाराज जी मेरी इच्छा है, कि मैं अपने को भगवान् का मुनीम मानूँ आज से भगवान् हमारे सेठ और मैं उनका मुनीम, महाराज ने कहा यह तो बड़ा ही उत्तम है। श्री मोहन ने कहा कि अब आप निश्चिन्त हो जायें मैं स्वयं सेठ से पूछ कर सब कार्य करूँगा। सम्मेलन के पाण्डाल का निर्माण नए आम छाप से कराया और भोजन की सारी व्यवस्था करना कठिन कार्य था परन्तु इतनी सुन्दरता से यह कार्य सम्पन्न हुआ कि सभी लोग आश्चर्य चकित थे। तीन दिनों तक पाण्डाल में बने नए संकीर्तन भवन में और आश्रम में बने पुराने कीर्तन भवन में एक साथ कीर्तन की ध्वनि सुनते ही ऐसा प्रतीत होता था, कि पृथ्वी पर स्वर्ग उतर आया है।

सम्मेलन में विशेष आकर्षण श्रीरमा देवी थी, उस समय वह मात्र 12 साल की थीं उसको देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते थे। श्री पूज्य महाराज की प्रसन्नता देखते ही बनती स्वयं भगवान् सेठ थे और उनका मुनीम मोहन था। तीन दिन वहाँ ऋद्धि-सिद्धि मानो हाथ जोड़ि खड़ी थी। सम्मेलन का वर्णन अलग से करने पर ही उसका पूर्ण आनन्द मिलेगा इसलिए कथा आगे बढ़ाने के लिए संक्षेप में इतना ही लिख रहा हूँ कि आज तक जितने सम्मेलन हुये थे उनमें वरहज का सम्मेलन सर्वप्रथम घोषित करते हुये सभी अतिथि बड़े प्रेम से आश्रम से विदा हुये।

उनका यह वर्णन उस समय तो हमको समझ में नहीं आया परन्तु आगे जब भी पूज्य गुरुदेव उस सभा के संचालक नियुक्त हुये और उनके बाद २५ वर्षों तक यह कार्य जब मुझे करना पड़ा तो मुझे ज्ञात हुआ कि उस समय उन लोगों का कहना कितना सत्य था। आज भी वह सम्मेलन चलता है परन्तु वरहज के बाद आज तक उस सम्मेलन से किसी सम्मेल की तुलना नहीं हो सकी। तीन दिनों तक ऐसा प्रतीत होता था कि संसार की सारी सुविधा यहाँ एकत्र हो गयी है। श्री कृष्ण इण्टर कालेज के सभी छात्र तथा अध्यापक एक से एक आगे बढ़कर सेवा में जुटे थे।

अध्यापकों में श्री धर्मराज उपाध्याय तथा छात्रों में श्री कृष्ण दत्त जो बाद में गयादास इण्टर कालेज के प्रधानाचार्य हुये बड़े ही उत्साह से काम में जुटे रहे। विद्यालय में प्रधानाचार्य श्री चन्द्रिका प्रसाद वर्मा और पं० राजदेव मिश्र ने अपने सभी साथियों के साथ अतिथि सेवा का कीर्तिमान् स्थापित कर दिया।

15 दिन पहले जिस सम्मेलन का होना अनिश्चितता के वातावरण में था उसकी इतनी उत्तम समाप्ति देखकर सभी लोग यही कहते थे कि श्रीराम कृपा से यह सम्पन्न हुआ है।

सम्मेलन की सफलता से वरहज भारत वर्ष के धार्मिक जगत् में चर्चा का विषय बन गया। अयोध्या मिथिला के साथ अब वरहज भी लोगों का आकर्षण का केन्द्र बन गया श्री महाराज जी का यश वरहज के साथ ही पूरे विहार में गूँज गया।

सम्मेलन के समाप्त होते ही वह विशाल पाण्डाल और आवास की बनी झोपडियाँ हटा ली गई जहाँ अखण्ड कीर्तन का: पाण्डाल था वह भी हटा लिया गया परन्तु जिस मण्डप में भगवान् श्री राम का विवाह हुआ वह मण्डप वैसे ही खड़ा था, उसकी प्रातः काल सफाई होती थी उसमें भगवान् श्री राम तथा माता जानकी जी का एक चित्र मात्र शेष था। लोग बड़ी श्रद्धा से वहाँ जाते और दर्शन करते थे।



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



विरोधी लोगों ने सोचा कि यह मण्डप इसलिए छोड़ा गया है कि इसके बहाने पूरी जमीन पर कब्जा कर लिया जायेगा। पूज्य महाराज जी ने उन लोगों को बार-बार समझाया कि सामान्य लोग भी विवाह मण्डप सात महीने तक सुरक्षित रखते हैं इसमें तो श्री रघुनाथ जी का विवाह हुवा है, इसको तो कम से कम एक साल तक सुरक्षित रखना चाहिए। इससे उनकी शङ्का और बढ़ गई उन लोगों ने नीचे से ऊपर तक रेलवे बोर्ड में भी पत्र भेजना प्रारम्भ कर दिया, उस समय पूरी जमीन रेलवे की थी। पूज्य बाबा राघवदास जी महाराज जेल में थे सरकार तो हम लोगों को ऐसे ही खोजती रहती थी उसको मौका मिला उसने मण्डप को तुरन्त हटाने की आज्ञा भेज दी श्री महाराज जी ने बड़े धैर्य से काम लिया, उन्होंने कहा कि मण्डप को यहाँ से हटाकर आश्रम के भीतर एक साल रखा जायेगा।

भगवान् का सारा विधान शुभ होता है। आज जिस स्थान पर भी अभय राघव मन्दिर बना है उस समय वह जमीन खाली थी पूरा मण्डप उतार कर वैसे ही उसी जमीन पर पुनः स्थापित कर दिया गया और उस मण्डप में पूजा अर्चना भी चलने लगी।

भगवान् ने विरोधियों के द्वारा एक कार्य का मानो प्रारम्भ कर दिया था जो सम्मेलन असम्भव प्रतीत होता है, उसकी समाप्ति पर मानो भगवान् ने स्वयं प्रकट होकर विश्वास दिलाया, कि भक्तों की कामना भगवान् पूरा करते हैं।

इस प्रसंग को लिखने में मेरा केवल एक ही तात्पर्य था कि जो गुरुदेव देखने में इतने साधारण थे उनमें कितनी शक्ति भरी हवी थी। उस समय आश्रम की अवस्था देखते हवे उस सम्मेलन की सफलता भी महाराज जी राम नाम के ऊपर अटूट विश्वास का फल था। आज भी जब मैं अभय राघव मन्दिर को देखता हूँ तो सारी बातें स्मरण हो आती हैं। बिना किसी पूर्व योजना के विशाल मन्दिर का निर्माण अत्यन्त विस्मय जनक है।

मन्दिर बनने से पूर्व भी अभयराघव का अपने आप वरहज में पधारना एक उत्तम प्रसंग है। अमावा स्टेट की महारानी को श्री महाराज जी बहन मानते थे वे उच्च कोटि की साधु सेविका थीं, श्री महाराज जी भैया दूज को वहाँ जाते थे और बहन का सारा व्यवहार करते थे। इस तह से रानी साहिबा भी श्री महाराज जी को अपना सहोदर ही मानती थीं। रानी साहिबा कोई मन्दिर बनवारही थीं उसमें जयपुर से श्री राम जानकी तथा दो श्री हनुमान जी की मूर्तियाँ अधिक आगई रानी साहिबा ने अपने पण्डितों के हाथ उन मूर्तियों को आश्रम पर भेज दिया।

श्री महाराज बड़े प्रेम से उन मूर्तियों को गुफा में रखवा दिए। उस समय आश्रम में उससे अधिक सुरक्षित स्थान कोई नहीं था। इस तरह से श्री अभयराघव भगवान् सपरिवार मन्दिर बनने से पूर्व ही पधार गए।

कलिकाल में नाम का बड़ा प्रभाव है यह पढ़ा तो था परन्तु देखा नहीं था सम्मेलन के समाप्त होते ही 9 माह के अन्दर ही श्री मोहन लाल को अप्रत्याशित लाभ हुआ वे साधारण व्यापारी थे। परन्तु अब अचानक असाधारण हो गए। उन्होंने श्री अवध में नेपाली कोठी जो इस समय ज्ञानकी महल के नाम से जानी जाती है उसको खरीद लिया। जानकी महल का उत्तरी भाग तो नया बना है। परन्तु उस समय केवल दक्षिणी भाग था। उसी स्थान पर मोहन लाल जी रहकर साधु सेवा करने लगे। श्री दिव्यकला कुञ्ज के महंथ भी दिव्य कला जी महाराज के निर्देशन में वे साधुसेवा तथा विवाहोत्सव का कई आयोजन करके श्री अवध में सेवा करने के क्षेत्र में विख्यात हो गए। श्री महाराज जी का अवध जाना पहले से अधिक हो गया। सम्मेलन के नाते श्री महाराज जी का परिचय अवध के सभी संतों से बहुत शीघ्र हो गया। नित्य



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



कहीं न कहीं भगवान् की कथा विवाहोत्सव हो जाता था। श्री राम पदारथ दास जी वेदान्ती तथा दिव्यकला जी से महाराज जी का प्रेम बढ़ता ही गया। श्री महाराज जी का पूरे विहार में यश फैल गया प्रति दिन कहीं न कहीं से श्री महाराज को आमन्त्रण प्राप्त होता रहता था।

श्री महाराज जी के साथ प्रेमा सरवी जिनका नाम रामकिशोर जी था उनका रहना आवश्यक था। वे पहले से ही विवाहोत्सव के बड़े प्रेमी थे उन्होंने आश्रम में भी एक मण्डली बनायी उसमें गुरुदेव के अनन्य प्रेमी नन्द कुमारपाठक का माताप्रसाद वर्णवाल रमाशङ्कर तिवारी नाम का एक छात्र तथा मैं भी था। अब श्री महाराज का बाहर जाने का कार्यक्रम प्रारम्भ हो गया उनका एक कार्यक्रम सीवान में हुआ। श्री महाराज जी तारणी बाबू के अतिथि थे। बच्चू बाबू महेश बाबू आदि वहाँ उस समय के प्रख्यात वकीलों में थे, श्री महाराज जी से दीक्षा ली।

श्री महाराज जी का यश छपरा से मुंगेर तक और दरभंगा से पटना तक फैल गया। बाद में तो पूरे विहार में कहीं भी सम्मेलन हो तो उसमें श्री महाराज जी का रहना आवश्यक हो गया। वे बड़ी सरल भाषा में उपदेश करते थे उनके कार्यक्रम के बढ़ने का हमको बड़ा लाभ मिला जो काम हम कई साल में करते वह मात्र कुछ महीनों में हो गया। उस समय मैरवा के पास पं० जगदीश जी के गाँव तरीवनी में एक पण्डित नकछेद जी रहते थे आश्विन की पूर्णिमा के दिन बड़ा भव्य समारोह करते थे। श्री अवध से विरहुति भवन में पुजारी जी प्रति वर्ष अपने दल के साथ 'वहाँ आते थे सम्मेलन में भाग लेते थे, उस सम्मेलन में श्री महाराज जी नियमित रूप से हम सभी लोगों को साथ लेकर जाते थे। इस तरह से सम्मेलन के बाद श्री अवध से जनकपुर धाम तक श्रीमहाराज जी तथा मोहन लाल जी का नाम फैल गया। श्री महाराज जी को सामाजिक कार्य करने का विचित्र कौशल था। वे बड़े कुशल वक्ता और सभा संचालन के पण्डित थे। श्री रूपकला हरिनाम यश संकीर्तन के पाण्डाल का उन्होंने नवीनीकरण किया। पहले वहाँ केवल भगवान् के कीर्तन और विवाहोत्सव के पद आदि का गायन हुआ करता था। वहाँ पर अब पण्डितों और कथा वाचकों का प्रवेश श्री महाराज जी की ही देन है।

पाण्डाल में कीर्तन और उपदेश कथा का कार्य दो भागों में बाँट दिया गया। संकीर्तन मण्डलियों का संचालन आचारी हृदय नारायण जी तथा कथा उपदेश का पाण्डाल श्री महाराज चलाते थे। अब सम्मेलन में गोस्वामी विन्दुजी जैसे रामायणी तथा अखिलानन्द जी महाराज जैसे प्रकाण्ड पण्डित भी आने लगे।

श्री अभयराघव मन्दिर के बनने की कथा भी विचित्र है—

भगवान् अब गुफा से बाहर निकलना चाहते थे। श्री परमहंस आश्रम के पास ऐसी सम्पत्ति तो थी नहीं कि मन्दिर बने। और भी बाबा राघव दास जी का सारा ध्यान शिक्षा क्षेत्र में था उस समय देश में विद्यालयों की बड़ी कमी थी। श्री महाराज जी भी अपना बहुत समय श्री बाबा राघवदास महाराज जी के कार्यों में देते रहते थे परन्तु एक दिन बिना किसी पूर्व प्रचार के मन्दिर की नींव खोदने का कार्य प्रारम्भ हो गया। मन्दिर की नींव वहीं खोदी गयी जहाँ भगवान् का विवाह मण्डप रखा गया था। मन्दिर किसने बनवाया, रुपया कहाँ से आया इसका ज्ञान हमको आज तक नहीं है मैं तो यही सोचता हूँ कि मन्दिर भी उसी तरह बना जैसे सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

उतने बड़े सम्मेलन में कितना रुपया व्यय हुआ, कहाँ से आया इसका ज्ञान श्री मोहन लाल को छोड़कर हमारे विचार से किसी को नहीं था वह ज्ञान भी महाराज जी ने किसी से नहीं कराया। उसी तरह मन्दिर का निर्माण भी कौन करा रहा है इसका कोई प्रचार नहीं हुआ मन्दिर बनकर तैयार हो गया। स्थापनाके समय पूज्य श्री बाबा राघवदास जी भी आ



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



गए थे उन्होंने बड़े. उत्साह के साथ भगवान् के सभी कार्यों को स्वयं किया । काशी, सोहनाग तथा अन्य कई स्थानों से वैदिक लोग एकत्रित हुये और स्थापना बड़े विधान के साथ सम्पन्न हो गयी जहाँ कुछ दिन पहले सम्मेलन होगा कि नहीं होगा कि शङ्का थी वहीं मात्र कुछ ही दिनों में मन्दिर बनवाना अपने में एक अनोखा कार्य था। मन्दिर के पुजारी के रूप में भी चन्द्रदेव शरण जी महाराज की नियुक्ति हुयी। पूजा बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ होती थी।

श्री महाराज जी का विहार प्रान्त का कार्यक्रम निरन्तर बढ़ता जा रहा था उसी क्रम में उनकी यात्रा मुजफ्फपुर के महुवा तहसील में हुई। वहाँ श्री महाराज श्री पं० रामचन्द्र जी मिश्र के अतिथि हुये। मिश्र जी बड़े ही योग्य व्यक्ति के थे। उस समय मुजफ्फरपुर के डिस्ट्रिक्ट जज थे वे साधु पुरुष थे। अत्यन्त सादा जीवन और परोपकार उनके जीवन का अंग बन चुका था। वे एक बार अपने वहनोई पं० शिवपूजन मिश्र के साथ वरहज आए पं० शिवपूजन मिश्र जी महाराज जी के शिष्य थे श्री अभयराघव मन्दिर में भगवान् का भोग उस समय मन्दिर से सटे भोजनालय में बनता था। सामने आँवला का पेड़ बड़ा सुन्दर लगता था। उस दिन भी महाराज जी जज साहब को साथ लेकर भोजन करने बैठे साथ में हम लोग भी भोजन पर बैठे थे। भोजन प्रारम्भ करते ही जज साहब ने कहा महाराज जी अंग्रेज लोग भोजन करते समय कोई विशिष्ट बात करते हैं, क्यों न हम लोग भी कोई बात करें।

महाराज जी ने कहा अवश्य कोई बात हो तो कहें जज साहब ने कहा आप लोग बिहार में बहुत घूमते हैं देश में और भी जगह जाते हैं सुना है अभी आप लोग कलकत्ता गए थे परन्तु आप लोग अपने स्थान पर कोई सम्मेलन क्यों नहीं करते हैं। मैंने कहा जज साहब हम सोचते तो हैं परन्तु जो सम्मेलन हम करना चाहते हैं वह वरसात के महीने में पड़ता है मैं चाहता हूँ कि योगिराज अनन्त महाप्रभु की जयन्ती मनाऊँ परन्तु वह भादों में चतुर्दशी को पड़ती है। जज साहब ने कहा अरे भाई लोग भादो में जन्ममाष्टमी मनाते हैं। चतुर्दशी तक तो वर्षा समाप्त हो जाती है। श्री महाराज जी ने कहा ठीक है, इस वर्ष से चतुर्दशी का कार्यक्रम कुछ बढ़ा दो और कुछ बाहर से विद्वानों को बुलालो। जज साहब ने कहा यह बड़ा शुभसंकल्प है, इसको आप लोग अवश्य पूरा करें। भगवान् ने बड़ी कृपा करके आश्रम में उस वृक्ष को कई साल से जो छोटे पौधे के रूप में पल रहा था वट वृक्ष का रूप दिया।

अनन्त चतुर्दशी का उत्सव कब से होता था। इसका ज्ञान तो हमको नहीं है, परन्तु जब मैं १६३६ में पढ़ने आया तो श्री महाराज जी ने हमसे कहा आज श्री योगिराज का जन्म दिन है उत्सव मनाया जायेगा। उस समय श्री चरण पादुका के आगे एक छोटी सी पक्की फर्श थी वहीं शाम की प्रार्थना होती थी वहीं कुछ लोग इकट्ठे होकर थोड़ी देर तक श्री योगिराज की चर्चा करने के बाद प्रसाद लेकर चले जाते थे। यह क्रम काफी दिनों तक चला केवल दो घण्टे का कार्यक्रम होता था परन्तु इस साल श्री गुरुपूर्णिमा के दिन श्री महाराज जी ने कहा याद है इस वर्ष भी अनन्त चतुर्दशी का स्वरूप कुछ बढ़ा करना होगा श्रीमहाराज जी ने एक रूपरेखा बनायी जो बिना किसी परिवर्तन के आज तक चलायी जाती है। उन्होंने श्री गुरुपूर्णिमा के बाद पत्र लिखना प्रारम्भ किया। आज भी हम लोग गुरुपूर्णिमा के बाद से ही श्री अनन्त चतुर्दशी का शुभारम्भ करते हैं। उस समय तक भी महाराज जी के भक्तों की संख्या बहुत बढ़ गयी थी। उसमें से उन्होंने कुछ लोगों को बुलाया भी मनोहर नाना श्री बाबूराम शर्मा श्री प्रतिवादी भयंकर शंकरानन्द श्रीवेंकटेश मिश्र श्री चन्द्रशेखर जी आदि विशिष्ट लोगों में पहले साल की कथा का शुभारम्भ किया। बहुत दिनों तक भी मनोहर नाना तथा श्री बाबूराम शर्मा ने



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



कथा का शुभारम्भ किया तथा इन दोनों महानुभावों ने अपने जीवन पर्यन्त उस कार्यक्रम में योगदान किया। अधिकांश व्यास जीवन पर्यन्त कथा में भाग लेते रहे।

पहले वह कथा श्री अभयराघव मन्दिर में ही होती थी बाद में मन्दिर के सामने मैदान में होने लगी और धीरे-धीरे व्यासों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होने लगी। व्यास लोगों के साथ श्री महाराज जी ने गायकों को भी आमन्त्रित किया भी व्याकुल जी सीताराम जी कोकिल-कण्ठ के आने से सभा का आकर्षण बढ़ा लोगों की संख्या बहुत होने लगी इसलिए अब कथा का प्रारम्भ श्री कृष्ण इण्टर कालेज के मैदान में होने लगी। एक साल कथा में उस समय के भारत प्रसिद्ध व्यास स्वामी बिन्दु जी का शुभागमन हुआ उसी साल पं०रमा कान्त जी त्रिपाठी, एम० ए० धर्मशास्त्र, जो पास के गांव जमिरा में रहने वाले थे, उनका भी शुभागमन हुआ। दोनों महानुभाव श्री महाराज के अनन्य प्रेमी थे। उस साल सभा में बड़ा उत्साह था। काफी दरियाँ बिछाई गई थीं लोग बड़ी संख्या में सभा में उपस्थित थे। रात में ६ बजे तक कथा बड़े आनन्द से चली इतने ही में बड़े जोरों से घटा घिर आयी श्रीगोस्वामी जी की कथा शेष थी। मैंने सोचा कि आज पहला दिन है जब 'सब बिस्तर भीग जायेगा तो बड़ी कठिनाई होगी मैंने श्री महाराज जी से निवेदन किया कि आज की कथा यहीं पूर्णमान ली जाय। नहीं तो कठिनाई होगी। जब मैंने कई बार आग्रह किया तो श्री महाराज जी सहज भाव से श्री पं० रमाकान्त जी त्रिपाठी की ओर देखकर मुस्कुराये श्रीत्रिपाठी जी भी मुस्कुरा रहे थे। इतने में श्री महाराज जी ने कहा— अब मैं समर्थावतार श्रीत्रिपाठी जी से निवेदन कर रहा हूँ कि वे श्री हनुमान चालीसा का पाठ करें जिससे बादल फट जाय और वर्षा न हो। श्रीमहाराज जी त्रिपाठी जी को समर्थगुरु रामदास का अवतार मानते थे। वे बड़े ही सुन्दर किसी अवतारी पुरुष के ही समान देखने में प्रतीत होते थे। त्रिपाठी जी हँसते हुये मंच पर सामने आकर श्रीमहाराज जी को प्रणाम करके हँसते हुये बोले आप लोग मुझे समर्थावतार सुनकर कुछ सोचते होंगे परन्तु बात बिल्कुल साफ है। जब पिता अपने पुत्र का नाम रामअवतार, शिवअवतार रख सकता है तो श्री महाराज जी ने उसी भाव से समर्थावतार कहकर मेरे ऊपर अपना वात्सल्य प्रेम ही प्रदर्शित किया है। इतना कहकर भी त्रिपाठी जी ने अपने पास बैठे हुये अपने ढोलक बजाने वाले रामबिहारी जी जो उनके साथ ही बराबर रहते थे, और श्रीहनुमान चालीसा पाठ के समय ढोलक बजाते थे, उनसे कहा रामबिहार ढोलक ठीक करो मैं श्रीमहाराज जी के आदेश से पाठ प्रारम्भ करने जा रहा हूँ इन्द्र भगवान की जैसी कृपा बादल फट जाए तो ठीक जोर से बरसे तो भी ठीक ही है। मुझे तो श्री महाराज जी की आज्ञा का पालन करना है। इतना कहकर श्री त्रिपाठी जी ने पाठ प्रारम्भ किया। पाठ करते समय त्रिपाठी जी तन्मय हो जाते थे।

पाठ, जब दुर्गम काज जगत के जेते,
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।



तक पहुँचा तो त्रिपाठी जी खड़े हो गए और बड़े आवेश में इसी चौपाई को बार-बार दुहराने लगे जब ५ बार चौपाई दुहराए उसी समय बड़े जोर से हवा वही और सारा बादल फट गया। आकाश में चन्द्रमा बहुत सुन्दर ढंग से दिखाई पड़ने लगा पहले जहाँ बादल के कारण अन्धेरा था वहीं सारा फील्ड प्रकाश से भर गया सारी जनता त्रिपाठी जी का जयकार करने लगी पाठ पूरा करके श्रीत्रिपाठी जी ने पुनः श्रीमहाराज जी को प्रणाम किया श्रीमहाराज जी ने श्रीत्रिपाठी जी को गले लगा लिया बड़ा अलौकिक दृश्य था। श्रीमहाराज जी ने गोस्वामी जी बिन्दु जी से कथा करने को कहा श्री विन्दु जी इस घटना से बहुत प्रभावित हुये। और श्री महाराज जी श्री



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



त्रिपाठी जी तथा हुनुमान चालीसा पाठ की प्रशंसा करने के बाद कथा का शुभारम्भ करते हुये उन्होंने कहा आज आप लोगों ने प्रत्यक्ष देखा कि भगवान् अपने भक्तों की लाज कैसे बचाते-हैं, उस दिन उनकी सारी कथा का केन्द्र बिन्दु-

राम सदा सेवक रूचि राखी। वेद पुराण संत सुरसाखी ।।

ही था। कथा समाप्त हुई लोग हर्ष और विस्मय से भरे उस दिन आश्रम से बिदा हुये। दूसरे दिन बड़ी संख्या में लोग सभा में आए उस वर्ष का सम्मेलन अपने पीछे एक घटना छोड़ गया लोग सम्मेलन के साथ ही वर्षा बन्द होने की बात करते थकते नहीं थे। उसके बाद उस सम्मेलन में कई बार यह दृश्य उपस्थित हुआ घटा घिर जाय लोग कहना प्रारम्भ कर दें शास्त्री जी पाठ करावें लोगों की बात सुनकर मैं भी गुरुदेव तथा श्री त्रिपाठी जी का स्मरण करके पाठ करता कराता था, और इन्द्र भगवान् वड़ी प्रसन्नता से वहाँ से चले जाते थे। इस तरह से उस सम्मेलन का लोगों के ऊपर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा।

जब वरहज आश्रम में बिजली लगी तब मैंने प्रबंधक लोगों से कहा-भाई यहाँ बिजली आनी चाहिए, लोगों ने एक पतले तार के सहारे बिजली मंच तक पहुँचाई सभा का कार्य प्रारम्भ हो चुका था मंच पर लगभग 25 आदमी बैठे थे उसमें उस समय में कृषि अध्यापक वाबू जंगबहादुर सिंह जी भी थे उनको बिजली का करेंट लगा गया। सभा में हलचल मच गई और मैंने भी जोर से चिल्लाकर कहा बाबा यह क्या हो रहा है, मैं रो पड़ा। परन्तु भगवान् की कृपा से पं०जगदीश दीन बड़े साहस से तार तोड़कर फेककर हँसते हुये हम को पकड़ कर बोले आप ठीक हैं न आप इस सम्मेलन की इतनी प्रशंसा करते रहते हैं तो आप को इतना डरना नहीं चाहिए। पं०जगदीश जी सम्मेलन के प्रति अगाध विश्वास रखते थे देहात के लोग जो कथा सुनने आते वे अपनी कुछ समस्यायें भी, श्री महाराज के सामने रखते थे और भगवान् उसको पूर्ण भी कर देते थे। इससे लोगों का भाव सम्मेलन के प्रति और बढ़ गया। यह सम्मेलन आज भी वरहज आश्रम में बड़े उत्साह के साथ चलाया जा रहा है। दिनों-दिन इसमें लागों का सहयोग और उत्साह बढ़ता ही जा रहा है। आश्रम के सभी अध्यापक, छात्र तथा अन्य कर्मचारी उसकी सेवा तन-मन और धन से बड़े उत्साह से करते हैं। पूरा वरहज और देहात के लोग इसको अपने घर का कार्य समझते हैं। भगवान् सबका प्रेम निरन्तर बढ़ाते रहे, जिससे यह सम्मेलन अनन्तकाल तक जन कल्याण करता रहे। यह घटना गुरुदेव के जीवन की परम अलौकिक थी। इसलिए इसका वर्णन पहले कर दिया गया। अब उनके लौकिक जीवन का वर्णन कर रहा हूँ।

श्री योगिराज अनन्त महाप्रभु ने एक संस्कृत विद्यालय का शुभारम्भ किया था जिसका पूज्य बाबा राघवदास जी ने ब्रह्मचर्याश्रम का स्वरूप प्रदान किया। ब्रह्मचर्याश्रम थोड़े ही समय में अत्यन्त विकसित हो गया और उसकी प्रशंसा चारों ओर फैल गई। उस समय पूज्य गुरुदेव मउनाथ भंजन में संस्कृत के छात्र थे वे अपने गाँव नरहरपुर से अपने छोटे भाई श्री हरदत्त जी को ब्रह्मचर्याश्रम में प्रवेश दिलाने के लिए अपने साथ परमहंसाश्रम में आए। पूज्य बाबा राघवदास जी बड़े पारखी थे। उन्होंने कहा मैं आपके भाई को अपने ब्रह्मचर्याश्रम में रख लूँगा परन्तु इसके बदले आपको ब्रह्मचर्याश्रम में अध्यापन का कार्य करना पड़ेगा श्री गुरुदेव ने सहर्ष स्वीकृति दे दी। गुरुदेव के ब्रह्मचर्याश्रम में आते ही ब्रह्मचर्याश्रम चमक उठा।

एक साथ छात्रों का सरयू स्नान नित्य यज्ञ शाला में हवन वेद पाठ का कार्य जो नित्य चलता था अब और सुन्दर ढंग से होने लगा। पूज्य बाबा राघवदास जी श्री महाराज के ऊपर सारा भार देकर देश सेवा में पूरा समय देने लगे वरहज ब्रह्मचर्याश्रम श्री



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



परमहंसानन्त संस्कृत महाविद्यालय का स्वरूप धारण कर लिया और इसमें चम्पारण बलिया आजमगढ़ आदि जिलों से छात्र पढ़ने के लिए आने लगे।

सन् 1936 में जब मैं पढ़ने आया उस समय तक संस्कृत महाविद्यालय पूर्ण विकसित हो गया था। व्याकरण के पं० मुनिवर जी मिश्र वेद के पं० रामेश्वर जी तथा साहित्य तथा व्याकरण के पं० शम्भुदयालु जी अपने अपने विषय के प्रतिष्ठित विद्वान माने जाते थे। पं० सत्यनारायण जी शास्त्री भी वहाँ अध्यापक थे। छात्रों की संख्या बहुत अधिक थी 100 छात्रों को भण्डारे से भोजन मिलता था। प्रथमा से लेकर आचार्य तक की शिक्षा दी जाती थी।

संस्कृत विद्यालय के साथ ही वहाँ का राष्ट्र भाषा विद्यालय भी बहुत ही विख्यात था उसमें हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान पंचानन मिश्र तथा पं० सिंहासन तिवारी अध्यापक थे वहाँ छात्रों की संख्या बढ़ती गयी। मद्रास, लंका और दूर-दूर से छात्र पढ़ने के लिए आने लगे। एक मठ के उत्तराधिकारी थे, वह भी यहाँ पढ़ने आए थे। उस समय अखण्ड हरिकीर्तन भी पूरा विस्तार कर चुका था। वहाँ साथ रहने के लिए आवास और भोजन का प्रबन्ध भ्झी आश्रम के द्वारा होता था। पूरा आश्रम दिन-रात जगमगाता रहता था। इस ब्रह्मचर्य आश्रम में अध्यापक ही नहीं बल्कि व्यवसायी भी रहते थे। उनका मान और बढ़ गया था। साधकों की भोजन की व्यवस्था के साथ ही आने वाले आश्रम के भक्तों की भीड़ लगी रहती थी। पूज्य बाबा राघवदास जी महाराज गुरुदेव के ऊपर सारा भार छोड़कर निश्चिन्त होकर कांग्रेस का कार्य करने लगे। जब ब्रह्मचर्याश्रम अपने शैशव काल में था। उस समय श्री गाँधी जी गोरखपुर आये थे पूज्य बाबा राघवदास जी ने अपने ब्रह्मचारियों के साथ जिनमें पं० विश्वनाथ त्रिपाठी जी भी थे। श्रीगाँधी जी का स्वागत किया था गाँधी जी बाबा राघवदास जी से इतने प्रभावित हुवे कि उन्होंने कहा कि यदि हमको बाबा राघवदास के समान केवल 10 साधु और मिल जायें तो हमलोग भारतवर्ष को स्वतंत्र करा लेंगे। उसके बाद बाबा राघवदास जी कांग्रेस का कार्य करने में लग गये।

पूज्य गुरुदेव के ऊपर आश्रम का भार सौंपकर वे स्वतंत्र रूप से विचरण करने लगे। प्रतिदिन कुछ कांग्रेस के लोग भी आश्रम पर आते रहते थे जिससे आश्रम में दिन-रात चहल पहल बनी रहती थी। पूज्य गुरुदेव सफल अध्यापक कुशल प्रशासक तथा योग्य वक्ता थे। अपने विशेष गुणों से उन्होंने आश्रम की सभी संस्थाओं को सुव्यवस्थित कर दिया। उसी समय प्रान्त में चुनाव का क्रा प्रारम्भ हुवा। मुख्य मुकाबिला कांग्रेस और अंग्रेजी राज्य के समर्थकों में था। पूज्य बाबा राघवदास के सफल अभियान से गोरखपुर में कांग्रेस शक्तिशाली बन गई थी। इसका ध्यान रखकर राजा साहब तमुकुही के समक्ष प्रत्याशी के रूप में पूज्य बाबा को खड़ा किया गया। डमी समाकन के समय बाबा ने अपना प्रतिनिधि ठाकुर सिंहासन सिंह को बनाया था। बाबा के खड़ा घबड़ाया और उसने बाबा दिया। सबको विश्वास था। होने से सरकारी पक्ष बहुत का नामांकन पत्र निरस्त कर कि जब बाबा मैदान में नहीं है तो राजा साहब अवश्य जीत जायेंगे। परन्तु बाबा ने जब अपना तुफानी दौरा प्रारम्भ किया तो सारा दृश्य बदल गया। लोग हर स्थान पर यही गाते थे। दही चिउरा राज के ओटवा सुराज के लोगों में बाबा राघवदास के प्रति बड़ी श्रद्धा थी बाबू सिंहासम सिंह जी एम०एल०ए० हुवे कांग्रेस की जीत हुई।

अपनी पराजय से दुखी सरकारी पक्ष के लोग कांग्रेस जनों पर अनेक कठिनाईयाँ खड़ी करने लगे।

आश्रम में हिन्दी और संस्कृत की पढ़ाई तो बहुत उच्च कोटि की थी परन्तु अंग्रेजी शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं थी सरकार को प्रसन्न करने के लिए पं० जानकी



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



शरण जी जो उस समय किंग जार्ज हाईस्कूल में प्रधानाचार्य थे। घोषणा कर दिये कि जो लोग राजासाहब को ओट नहीं दिये हैं उनके लड़कों का नाम हम अपने विद्यालय में नहीं लिखेंगे। कुछ संभ्रान्त लोग श्री बाबा राघव दास जी से अपनी व्यथा सुनाये बाबा ने कहा ठीक है, अब एक अंग्रेजी स्कूल भी खोला जायेगा।

कांग्रेस की जुवली पर 1935 में श्री कृष्ण स्कूल की स्थापना हुई, और 1936 में इसको हाईस्कूल की मान्यता प्राप्त हुई। गुरुदेव को भारतीय संस्कृति के प्रचार का बड़ा ध्यान रहता था उन्होंने सोचा क्यों न श्री कृष्ण स्कूल में कुछ ऐसा पाठ्यक्रम चलाया जाय जिससे यहाँ के लड़के अन्य स्थानों के लड़कों से भिन्न दृष्टि गोचर हों। श्री कृष्णविद्यालय की प्रार्थना से लेकर सभी कार्यों का निर्धारण अन्होंने स्वयं किया था।

नीलाम्बुज श्यामलकोमलौगं, सीता समारोपितवाममागम्।

पाणौ महासायक चारुचापं नामामि रामं रघुवंश नाथम्॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।

वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

इन दो श्लोकों के पाठ के बाद श्रीराम जयराम जयजय राम का 5 बार गान करने पर भारत माता की जय बोलकर प्रार्थना पूरी होती थी।

विद्यालय के सभी छात्रों के लिए गीता अनिवार्य विषय के रूप में थी। पहले घण्टे में पहले एक जीरो पीरीयड नाम का घण्टा 10 मिनट का होता था सभी अध्यापक पहले अपनी कक्षा में 1 श्लोक गीता का सभी लड़का से पाठ कराते थे, और बाद में उस श्लोक का अर्थ बच्चों को समझाते थे, इससे बच्चों में गीता प्रेम बहुत बढ़ गया। चौथे घण्टे के बाद 30 मिनट का अवकाश होता था उसमें 15 मिनट का एक घण्टा धर्मघण्टा के नाम से श्री महाराज जी ने प्रारम्भ किया था जो आज भी उसी प्रकार चलाया जाता है। उसमें प्रारम्भ में—

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तामं।

न्यायेन मार्गेण महिं महीशाः ॥

गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यम् ।

लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वसन्तु निरामया,

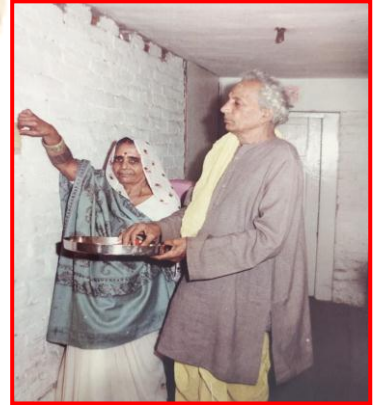
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत् ॥

मङ्गल भवन अमंगलहारी।

द्रवहु सो दसरथ अजिर विहारी॥

राम सदा सेवक सुख राखी।

वेद पुराण संत सुर साखी॥



इन पद्यों के पढ़ने के बाद 5 बार श्रीराम जय राम जय जय राम का जप करने के बाद विलोम करके पुनः उन्हीं पद्यों का पाठ करके सम्पुट करके बाद में सियावर राम चन्द्र की जय बोलकर कथा प्रारम्भ होती थी।

श्री पूज्य गुरुदेव स्वयं इस कथा का संचालन करते थे। उसमें सभी छात्रों और अध्यापकों की उपस्थिति अनिवार्य थी। अपने सभी व्यस्त कार्यों को छोड़कर गुरुदेव इस कथा में अवश्य आते थे। गुरुदेव प्रातः काल से 12 बजे दिन तक मौन रहते थे या बहुत आवश्यक होने पर संस्कृत में बोलते थे। जब वे आश्रम पर रहते थे। उस समय अपना मौन इसी कथा में तोड़ते थे। गुरुदेव की कथा शैली इतनी विचित्र थी कि कुछ दिनों के बाद अध्यापक



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



और छात्र धर्म घण्टा की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगे। 15 मिनट के बाद लड़के जलपान करते और आगे की पढ़ाई प्रारम्भ होती थी।

श्री महाराज के प्रतिदिन विद्यालय में अध्यापक के रूप में आने से विद्यालय में अनुशासन बड़ा उत्तम हो गया सभी अध्यापक बड़े प्रेम से अपना अपना कार्य सम्पन्न करते थे। विद्यालय के प्रधानाचार्य भी चन्द्रिका प्रसाद श्रीवास्तव एक धार्मिक तथा बड़े उत्साही व्यक्ति थे वे स्वयं इन कार्यों में बड़ी रुचि रखते थे इससे विद्यालय बड़े वेग से आगे बढ़ने लगा।

पूज्य बाबा राघव दास जी ने ग्रामोद्योग के अनेक कार्यक्रम यहाँ प्रारम्भ किया सूतकातना, हस्त करघा, हाथ का कागज बनाने का काम, लकड़ी का काम, साबुन बनाना, हाथ से बटन बनाना आदि। अनेक कार्य प्रारम्भहुवे। यहाँ चर्मोद्योग प्रान्त में विख्यात था लाजपत अनाथालय के नाम से बाबा ने एक अनाथालय खोला उसमें अनेक अनाथ बच्चों का भरण होता था। उसमें से कई बच्चे बाद में बड़े बड़े पदों पर पहुँचे। रामजी नाम का एक लड़का तो आई०एस० एलायड में आया बैंड इनकमटैक्स कमिशनर हुवा। उसमें का एक लड़का जिसका नाम परमेश्वर पाण्डेय था। वारणसी सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय का अध्यापक हुवा। उस समय श्री कृष्ण 'स्कूल का बैण्ड पूरे प्रान्त में चर्चा का विषय था। बाबा ने हिन्दू लड़कों को सिलाई की शिक्षा की व्यवस्था की जिससे कई हिन्दू दर्जी अपने काम में लगे। उसमें चार ब्राह्मण लड़के थे। उस समय आश्रम का विकास देखकर यह ज्ञात नहीं होता था। कि वरहज छोटी जगह है। वर्धा से कुछ कार्यकर्ता यहाँ आते और यहाँ से कुछ लोग वर्धा जाते थे। इससे इस आश्रम का गाँधी जी से सीधा सम्बन्ध हो गया था। दिन रात आश्रम में आने जाने वाले लोगों की भीड़ लगी रहती थी, और सबके स्वागत का भार पूज्य गुरुदेव पर ही था। सायंकाल श्री हनुमत् निवास में कथा लक्ष्मी प्रसाद जी जो उस समय वरहज के विख्यात व्यापारी थे नियमित श्रोता थे।

हर मंगलवार को कीर्तन भजन का आयोजन होता था। प्रतिदिन सायंकाल एक प्रार्थना होती थी। उसमें आश्रम के सभी लोगों की उपस्थिति अनिवार्य थी। गुरुदेव सभी कार्यों का संचालन स्वयं करते थे, और प्रार्थना के बाद एक छोटा सा भजन और उपदेश होता था। उस समय ऐसी कोई प्रवृत्ति नहीं थी जो आश्रम में दिखाई न देती हो पठन-पाठन के साथ हरिभजन, उद्योग धन्धे और देश सेवा का कार्य नित्य चल रहा था। जनता में आश्रम पर अगाध श्रद्धा थी। वह अपनी शक्ति के अनुसार उसमें बराबर अन्न दान तथा अन्य सेवा करती रहती थी। उसी समय गीता, रामायण परीक्षा के नाम से एक गीता, रामायण की परीक्षा संचालित होती थी जिसमें संचालन का सारा भार गुरुदेव के ऊपर था। आर्य धर्म प्रवेशिका नाम की संस्था परम्परा हिन्दू समाज को एक के सूत्र में बाँधने का अनुपम साधन थी।

आश्रम उस समय सामाजिक नैतिक तथा औद्योगिक कार्यों का केन्द्र बना हुवा था उसी समय महात्मा गांधी ने भारत छोड़ो आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया। 8 अगस्त की रात में जब सभी राजनेता वन्द करदिये गये यह समाचार आश्रम में आया तो गुरुदेव हम सभी लोगों को बुलाकर कहा अब समय आ गया है कि प्रत्येक भारतवासी अपनी शक्ति के अनुसार भारत माता की सेवा करें। 6 अगस्त को ब्रह्मवेला में उन्होंने सब को साथ लेकर आश्रम से सरयू घाट तक एक मौन जुलूस निकाला उसमें सबसे कह दिया गया था। कि कोई आपस में किसी प्रकार की बात न करें, और बीच में कोई नारा न लगाया जाय।

बरहज का थाना भी सरयू तट पर ही है। सभी लोग जुलूस का नेतृत्व करते गुरुदेव को देखें, कुछ लोग आकर प्रणाम भी किये फिर जुलूस आश्रम पर लौट आया। सम्भवतः यह १९४२ का पूरे भारतवर्ष में पहला जुलूस था। जो ८ अगस्त के विरोध में निकाला



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



गया था, और जिसका नेतृत्व गुरुदेव ने किया था उस दिन तो आगे कोई कार्यक्रम नहीं हुआ परन्तु अगले दिन चारों ओर भीषण उपद्रव मच गया।

कुछ दिनों तक रेलमार्ग के बन्द होने अखबारों के निकलने से पूरा देश अलग-थलग पड़ गया। किसी को पूरा पता न चल सका कि नेता लोगों का क्या हुआ बाद में पता चला कि सभी लोग आगा खाँ पैलेस में अहमद नगर में नजरबन्द हैं महात्मा गांधी के संकेत पर कुछ लोग भूमिगत होकर कार्य करने के लिए पहले ही दिल्ली से बाहर चल गए थे, जिनमें बाबा राघवदास जी तथा जयप्रकाश नारायण प्रमुख थे।

अंग्रेजों का दमन पूरे भारत वर्ष में अत्यन्त क्रूरता का रूप धारण कर चुका था। श्री परमहंस आश्रम अवैध घोषित कर दिया गया बरहज आश्रम की सभी संस्थाएँ बन्द हो कन चुकी थीं श्रीकृष्ण इण्टर कालेज में प्रधानाचार्य श्री चन्द्रमा प्रसाद पकड़े जा चुके थे। कुछ लड़के रिस्टिकेट भी हो गये थे। उसी समय गुरुदेव ने हम सभी लोगों को अपने अपने घर जाने की आज्ञा देकर अखण्ड कीर्तन करने वाले लोगों की व्यवस्था करे अपनी यात्रा को अत्यन्त गुप्त रखते हुये, प्रयाग श्रीकृष्णचन्द्र जी श्रीवास्तव जिला जज जो इस समय प्रयाग में ही उनके आवास पर पहुंचे। जज साहब गुरुदेव के बड़े प्रिय लोगों में थे, जज साहब ने कहा आपकी संस्था तो पूरे प्रान्त में पहले नम्बर पर अवैध घोषित कर दी गई थी। गुरुदेव ने कहा इसी संबंध में आपसे विचार के लिए आया हूँ। इस समय आश्रम पर अखण्ड कीर्तन करने वाले लोगों को छोड़ कर कोई नहीं है बाबा जी भी दिल्ली से लौटे नहीं हैं। इसीलिए मैंने सोचा आप इस समय हमारी उचित साहयता कर सकते हैं।

जज साहब ने कहा अवैध संस्था को वैध कराने की प्रक्रिया बड़ी लम्बी होगी उसमें कई माह का समय लग जायगा। मैं आपको एक सुगम मार्ग बतलाता हूँ, आप एक नया नाम अपनी संस्था का रख दें, तो कार्य अत्यन्त सुगम हो जायगा। आदरणीय जज साहब अपने कुछ सलाहकारों को बुलाकर संस्था का नया नामकरण श्री परमहंसान्त (परमहंसानन्द) शिक्षा मन्दिर आश्रम बरहज कर दिया और उसका नया वाई लाज बनाकर श्री महाराज जी को सौंप कर कहा आप स्वयम् इसको पढ़ें जब आप की स्वीकृति मिल जायेगा तो मैं इसका रजिस्ट्रेशन कराने की व्यवस्था कर दूँगा आश्रम का नया नाम बाइलाज कायस्थ पाठशाला प्रयाग से बहुत मिलता जुलता है और बहुत सुविधा पूर्ण है श्री महाराज जी वाई लाज देखकर हंसते हुये बोले इसमें तो आपने सचमुच संस्था का नया जन्म करा दिया है। जज साहब ने रजिस्ट्रेशन की कारवाई भी बड़ी सरलता से पूर्ण करा कर श्री महाराज जी को दे दिया।

जब भी महाराज जी प्रयाग संस्था के कार्य में व्यस्त थे, उसी समय कैप्टनमूर जो उस समय का अत्यन्त क्रूर व्यक्ति माना जाता था एक फौजी टुकड़ी लेकर आश्रम पर आ धमका आश्रम में उस समय कोई नहीं था। श्री अखण्ड कीर्तन भवन में मात्र दो आदमी हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे की मधुर ध्वनि कर रहे थे।

कैप्टनमूर गुस्से से भरा हआ इधर उधर घूम रहा था। उसी समय फौज में एक सिक्ख नवयुवक था। उसकी दृष्टि अखण्ड कीर्तन पर पड़ी उसने कैप्टनमूर से कहा यह तो कोई धार्मिक स्थान है, हम लोग यहाँ कुछ करेंगे तो उसका असर यहाँ उल्टा पड़ेगा और किसी के धर्म में हस्तेक्षेप न करने की जो सरकारी नीति है उसके विरुद्ध कार्य होगा। इससे हम तो यही कहेंगे कि हम लोग यहाँ से चुप चाप चले चलें क्योंकि यहाँ उन दोनों लोगों को छोड़कर जो कीर्तन कर रहे हैं दूसरा कोई नहीं है और जो कीर्तन करते हैं वे कीर्तन



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



छोड़कर बात भी नहीं कर सकते। अन्त में आश्रम में थोड़ी देर घूम कर झल्लाया हुआ कैप्टन मूर बाजार में जाकर एक दो आदमी को मारपीट कर पं० श्याम सुन्दर तिवारी की खादी की दुकान जलाकर देवरिया चला गया।

जाको राखे सायियों मारि सकै ना कोय,

की बात अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई। कैप्टन मूर आश्रम में भारी उपद्रव मचाना चाहता था क्योंकि उसको 6 तारीख की ब्रह्मवेला में निकाला गया जुलूस जो गुरुदेव के नेतृत्व में मौन जुलूस के रूप में निकाला गया था, उसकी बात सी० आई० डी० पुलिस ने यह कह कर प्रचारित किया था, कि आन्दोलन उसी दिन आश्रम के लोगों ने प्रारम्भ किया था। जो वाद में पूरे प्रान्त में फैला परन्तु भगवान ने अपने नाम की महिमा प्रत्यक्ष कर दी हरिनाम कीर्तन को सुनकर उस सिक्ख हवलदार की बात मानकर कैप्टन मूर शान्तभाव से आश्रम से चला गया। पूज्य गुरुदेव भी उस समय जब सारा यातायात अस्त व्यस्त था। किसी प्रकार अपनी संस्था का नया नामकरण कराकर सकुशल बरहज आये। बरहज आने पर कैप्टनमूर के आने और अखण्ड कीर्तन के प्रभाव से आश्रम की रक्षा सुनकर भाव विभोर हो गए उन्होंने महान् धैर्य और कुशल नेतृत्व का परिचय देते हुये पुनः सभी संस्थानों के संचालन में लग गए।

सुरक्षा की दृष्टि से गीता रामायण परीक्षा समिति गीता प्रेस भेज दी गई थी अन्य संस्थायें पुनः अपना कार्य पूर्वत् करने लगीं। श्रीकृष्ण इण्टर कालेज के नए प्रधानाचार्य श्री नारायण दत्त तिवारी नियुक्त हुए। उत्साह पूर्वक कार्य करने लगे। पूज्य बाबा राघवदास जी महाराज महात्मा गांधी के आदेश से भूमिगत होकर कार्य कर रहे थे यह बात सरकारी क्षेत्र में सबको ज्ञात हो गयी थी। सरकार ने बाबा की खोज में इधर उधर कई लोगों को पकड़ कर जेल में डाल दिया जिनमें पं० विजय नाथ जी मुख्य थे। जब बाबा जी का कुछ पता न चला तब देवरिया, जो उस समय जिला नहीं था वहाँ के ज्वाइंट मैजिस्ट्रेट टी० एल० महेन्द्रा गोरखपुर के जिलाधीश की आज्ञा से गुरुदेव को पकड़ने के लिए भेजे गए टी० एल० महेन्द्रा अपने दल बल के साथ आश्रम पर आकर गुरुदेव से मिले। उन्होंने गुरुदेव से पूछा बाबा जी कहाँ हैं? गुरुदेव ने कहा वे अज्ञातवास कर रहे हैं, तो मैं उनका पता कैसे बता सकता हूँ म स्वयं उनका ठीक ठीक पता लगाने का यत्न का रहा है परन्तु मुझे उनके बारे में ठीक-ठीक पता नहीं च रहा है और हमको पता लग भी जाय तो मैं उनका शिष् हूँ मैं वता नहीं सकता। मजिस्ट्रेट साहब इस निर्भीक उत्तर से बहुत प्रसन्न हुये और बोले मैं गोरखपुर के जिलाधीश के आदेशानुसार आपको गिरफ्तार कर रहा हूँ गुरुदेव ने कहा मैं तैयार हूँ आप गिरफ्तार करें मजिस्ट्रेट साहब कहा आपको जेल में नहीं हमारे बंगले में रहना होगा। यह है कह कर मजिस्ट्रेट साहब गुरुदेव को देवरिया ले गए, और ३ दिन बाद गोरखपुर के जिलाधीश को सारी बातें बताकर पुनः गुरुदेव को आश्रम पर भेज दिए।

बनारस से प्रकाशित होने वाले आज के संपादक पडारकर जी बाबा जी के मित्र थे। उन्होंने सरकारी ध्यान बाबा जी की ओर से हटाने के लिए अपने पत्र में बाबा जी के मरने का दुःखद समाचार प्रकाशित किया। समाचार पढ़कर श्री गुरुदेव बहुत दुःखी हुये परन्तु, तुरन्त उन्होंने पण्डित राजकिशोर जी को बनारस भेजकर इस बात की सच्चाई का पता लगाने को कहा राजकिशोर जी से पडारकर जी ने सच्ची बात बता दी कि यह समाचार मैंने बाबा जी की राय से छापा है। जब राज किशोर जी बनारस से आए तब श्री महाराज जी ने बाल हनुमान जी की विधिवत् पूजा करके प्रसाद बाँटा। इस तरह से प्रतिदिन सरकारी पक्ष बराबर यत्न करता हा पर बाबा जी का पता लगाने में वे लोग पूर्णतया असफल रहे।



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



महात्मा गांधी के आदेश से सभी भूमिगत नेता प्रकट हो गये और उन लोगों को जेल भेज दिया गया। उसी समय पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने देश का दौरा किया, वे लोग छोड़ दिये गये। पण्डित जी की सभा का आयोजन मिडिल स्कूल के मैदान में हुआ। आठ दस चौकियों का सादा मंच बना था। पण्डित जी को बरहज 12 बजे आना ने था, जब वे 4 बजे तक नहीं आए तो लोग धीरे-धीरे कम होने लगे। जो कार्यकर्ता उनके स्वागत के लिये आये थे वे भी मंच पर ही बैठ गये। पण्डित राजदेव जी मिश्र अपने साथ कुछ स्कूल के लड़कों को साथ लेकर पण्डित जी की सभा में व्यवस्था के लिए गए थे। उनके साथ मैं भी था मैंने उनसे कहा यदि इसी समय पण्डित जी आ जाय तो क्या दशा होगी उनके साथ कुछ और लोग भी होंगे वे कहाँ बैठेंगे उन्होंने जाकर बड़े प्रेम से उन लोगों से कहा भइया अब आप लोग नीचे बैठ जाँय। पण्डित जी आते ही होंगे उनके कहने पर जब कोई आदमी मंच से नहीं उतरा तो मेरे साथ राजनारायण पाठक भी गए थे, मैंने उनसे कहा से मैं अध्यापक हूँ यदि किसी के साथ कडा व्यवहार करूँ तो उचित नहीं होगा तुम इन सभी लोगों को वहाँ से उठने को विवश कर दो। पाठक तुरन्त वहाँ पहुँच कर एक एक करके सबको मंच से उतारने लगे वहाँ कुछ अव्यवस्था फैल गयी इसी बीच पण्डित जी आ गए मैं पण्डित जी को साथ लेकर मंच की ओर जा रहा था कुछ अंधेरा हो गया था प्रकाश का प्रबन्ध नहीं था। राज नारायण पाठक पण्डित जी को साधारण व्यक्ति समझकर डाँटकर बोले उधर कहाँ जा रहे हैं मैंने तुरन्त राजनारायण पाठक को डाँटकर कहा पैर छुवो यही पण्डित जी हैं। मैंने कहा पण्डित जी यह बालक है आपको पहचाना नहीं इसी से उदण्डता कर बैठा यह आपकी सुविधा के लिए देर से वहीं लोगों को जाने से रोक रहा था पण्डित जी हँसते हुए पाठक की पीठ पर आशीर्वाद का हाथ थपथपाते हुये मंच पर पहुँच गए। पण्डित जी बहुत थक गए थे। उन्होंने कहा मेरे आने में देर हो गई आप लोग माफ करेंगे मुझे यहाँ आने की कोई जरूरत नहीं पड़ती परन्तु मेरे भाई बाबा राघवदास जी अभी जेल में हैं इसलिए हमको आना पड़ा।

हम जल्द ही शिमला कान्फ्रेस में जा रहे हैं। मुझे वहाँ से कुछ मिलने की आशा तो नहीं है क्यों कि मुझे अंग्रेजों का स्वभाव ठीक ठीक मालूम है परन्तु एक बात कहें जाता हूँ यदि शिमला वार्ता विफल हुई, तो अबकी बार हम लोग जेल नहीं जायेंगे अब जेल जाने की अंग्रेजों की बारी है। लोगों ने पण्डित जी की जयकार से आकाश भर दिया लोग हंसते उछलते अपने अपने घरों को चले गए। एक दिन समाचार मिला कि पूज्य बाबा राघव दास जी जेल से छूटकर कल प्रातः काल की गाड़ी से आ रहे हैं। वरहज में आनन्द की लहर दौड़ गयी देहात से भी बहुत बड़ी संख्या में लोग चारो ओर से उमड़ पड़े। उस दिन कार्तिक पूर्णिमा के मेले का दृश्य उपस्थित हो गया पूरे सरयू नदी ने नावों का पुल बनाया जिससे देवार के लोगों को आने की बड़ी सुविधा हुई सलेमपुर से वरहज आने वाली गाड़ी तिरगे झण्डे से लहरा उठी भारत माता की जय बाबा राघवदास की जय की ध्वनि से आकश गूँज उठा उस समय वरहज में स्टेशन से लेकर सरयू तट तक केवल नर मुण्ड ही दिखाई देता था। पूज्य गुरुदेव ने रथयात्रा मेले में जिस रथपर भगवान् की शोभा यात्रा निकाली जाती है उसी रथ को भली भाँति सजवाकर श्री बाबा राघवदास जी को उसी पर बैठाकर शोभायात्रा निकालने की व्यवस्था की थी स्टेशन पर बाबा के आते ही लोग भारत माता की जय का घोष करते हुये पूरे आनन्द से उछल कूद रहे थे गुरुदेव ने बाबा का चरण स्पर्श किया। बाबा ने गुरुदेव के समाचार पूछा गुरुदेव ने कहा आपके शुभ दर्शन से बढ़कर और कौन सी वस्तु है जिसकी हमें आवश्यकता है। गुरुदेव ने बाबा को रथ पर बैठने की प्रार्थना की बाबा ने कहा मुझे वहाँ बैठने में बड़ा संकोच हो रहा है।



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



परन्तु बाद में बाबा और कई लोगों के बार बार आग्रह करने पर रथ पर बैठे। लोगों ने बाबा को फूल मालाओं से ढक दिया। उस रथ को चार आदमी खींचते थे धीरे-धीरे रथ सरयू तट की ओर बढ़ा लोगों की भीड़ नारे लगाते चल रही थी कई स्थानों पर बाबा की आरती उतारी गयी बाबा गयादास जी जो उस समय कांग्रेस के सभापति थे उन्होंने पूल के उस पार बाबा की आरती उतारी और फूल माला से ढक दिया। बाबा की सार्वजनिक सभा जहाँ पर आजकल बाब गया दास इण्टर कालेज है वहीं सम्पन्न हुई। सभा समापन के बाद बाबा जी आश्रम पर आए। बहुत दिनों के बाद आज दोनों बाबा के एक साथ बैठने से सायंकालीन प्रार्थन की शोभा बहुत बढ़ गई थी उस दिन की सभा में बाबा न हरि तुम हरौ जनकी भीर पद का गायन अत्यन्त भाव विभोर होकर अपने मधुर कण्ठ से किया। उस सभा का नियम था सभा में एक पद गाया जाता था, आज बाबा ने स्वयं वह कार्य सम्पन्न किया। श्री कृष्ण इण्टर कालेज की प्रार्थना और धर्म घण्टा के समान ही प्रतिवर्ष होने वाली श्री सत्य नारायण भगवान् की कथा भी गुरुदेव की स्थापित परम्परा का एक नमूना है। 1940 में जब पहले वर्ष की कथा का समय आया तो विद्यालय में बड़ा हर्ष था। नियमानुसार इस कथा का वाचन संस्कृत अध्यापक होने के नाते हमको ही करना था। मैंने श्री गुरुदेव से निवेदन किया जिस स्थान पर हमारे संस्कृत विद्यालय में गुरुजन तथा आप उपस्थित रहेंगे वहाँ आचार्य पीठ पर मेरा बैठना उचित नहीं है मेरा निवेदन है कि एक दिन साल भर में आप इस कार्य का सम्पादन कर देते तो मुझे बड़ा संतोष होता। पूज्य गुरुदेव ने कहा संस्कृत विद्यालय के गुरुजनों से देवपूजन कराने को निवेदन करके सबको आमंत्रित करो वे लोग पूजन करा देंगे और कथा वाचक मैं रहूँगा। दूसरे दिन कथा में श्री पं० रामेश्वर जी त्रिपाठी वैदिक श्री शम्भु दयाल जी आदि विद्वानों ने विधिवत् स्वरिणपाठ पूर्वक देवपूजन सम्पन्न किया। गुरुदेव ने कथा वाचन किया जब हवन का समय आया तो गुरुदेव ने हमसे कहा— अब तुम भगवन्नाम स्मरण करो इससे लाभ यह होगा कि जब तुक हवन होता रहेगा तब तक शेष लोग भगवन्नाम का उच्चारण करते रहेंगे। मैंने भी गुरुदेव के आदेश का पालन किया। आज भी श्री कृष्ण स्कूल की कथा ठीक उसी क्रम से चलती है। कथा में कभी-कभी बाहर के सन्त और विद्वान भी आ जाते थे। पहले यह कथा श्रीकृष्ण स्कूल के एक कमरे में होती थी बाद में छात्रों की संख्या में वृद्धि हुई और भगवान का मन्दिर बन गया तब से यह कथा भगवान के मन्दिर में ही होती है। उस वर्ष कथा का आयोजन मन्दिर में हुआ था। उसी दिन बिना किसी पूर्व सूचना के पूज्य श्री रमाकान्त जी त्रिपाठी का शुभागमन हो गया। पूज्य गुरुदेव ने त्रिपाठी जी का भव्य स्वागत किया। और कहा कि आज आपका आना आश्रम के लिए विशेष शुभ सूचना हैं आप बच्चों को उनकी सफलता का आशीर्वाद दें पूज्य त्रिपाठी जी ने हँसते हुए कहा योगिराज यहाँ ऐसे लोगों को आने ही नहीं देते जिनकी सफलता में सन्देह हो आश्रमवास ही सफलता का द्योतक है। तथापि आपके आदेश का पालन करते हुवे श्री गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज की दो चौपाइयों का स्मरण करता हूँ—

पुनि वन्दौ सारद सुर सरिता जुगल पुनीत मनोहर चरिता।

मज्जन पान पाप हर एका कहत सुनत एक हर अविवेका।।

परीक्षा में जाते समय श्रद्धा और विश्वास के साथ इनका पाठ करने से बड़ा लाभ होता है। अपने जीवन में इनको अभी कई बार परीक्षा देनी हैं इसका प्रयोग करके अपने भावी जीवन को सफल बनावें यही हमारी भगवान् से प्रार्थना है। चौपायियों को सुनकर सभी लोग बड़े प्रसन्न हुये और जडके इन चौपाइयों को लिखने के लिए बहुत उत्सुक हुये उनकी उत्सुकता देखकर मैंने घोषणा कर दी बच्चो घबड़ाओं नहीं कल कक्षा १० के सभी वर्ग के श्यामपट पर यह चौपायी लिख दी



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



जायेगी सभी लोग कल अपनी कक्षा में इसका शुद्ध लेखन कर सकें इसलिए यह व्यवस्था की जायेगी। दूसरे दिन विद्यालय में सभी लड़के उन चौपायियों को लिखकर बड़े प्रसन्न हुये। तब से आज तक यह परम्परा चली आ रही है कुछ लड़के अपने जीवन में इसका प्रयोग पी०सी०एस०, आई०ए०एस०, डाक्टरी, इंजनियरिंग, आदि परीक्षाओं में भी करके सफल हुये और बाद में उन्होंने अपना अनुभव बताया। भी गुरुदेव और उनके अन्य मित्र सन्तों में जनक पुर के मौनी बाबा और मैरिटार के रवाकी बाबा मुख्य थे। मौनी बाबा शरीर पर कोई वस्त्र धारण नहीं करते थे। केवल केले की लगोटी पहने रहते थे। और भीषण ठंढक में भी नंगे ही रहते। भोजन केवल हाथ पर लेकर ही करते थे किसी पात्र में भोजन परोस कर नहीं खाते थे जल भी चुल्लू से ही पीते थे। जिस समय आश्रम पर आए थे उनकी अवस्था १०० वर्ष मानी जाती थी। वे बड़े उदार और परिश्रमी व्यक्ति थे। देशमें स्वतंत्रता की मांग बढ़ती जा रही थी। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की ललकार हिटलर की मार ने अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए विवश कर दिया था उसी समय महात्मा गांधी का भारत छोड़ो आन्दोलन देश में नयी जागृति की लहर फैला रहा था अंग्रेजों ने भारत छोड़ने के पहले भारत को दो भागों में बाँटने का प्रस्ताव रखा। नेता लोग तो विवश थे क्यों कि उन्होंने भारत विभाजन का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था परन्तु साधु समाज उस प्रस्ताव का घोर विरोधी था। पूरे देश में सन्तों के दौड़े प्रारम्भ हो गए। गुरुदेव के नेतृत्व में कई स्थानों पर विरोध प्रदर्शन के लिए सभायें की गई अन्त में 14 अगस्त के दिन पूज्य स्वामी करपात्री जी नेतृत्व में एक सत्याग्रही दल दिल्ली पहुँचा उसमें पूज्य गुरुदेव ने भी भाग लिया। पूज्य स्वामी करपात्री जी महाराज तथा गुरुदेव को गिरफ्तार करके लाहौर जेल भेज दिया गया। देश में इसकी घोर निन्दा हुई परन्तु आन्दोलनकारी संतों की संख्या कम थी, इसलिए आन्दोलन शीघ्र ही समाप्त हो गया। ध्यान देने योग्य बात यह है कि उस आन्दोलन का नारा धर्म की जय हो अधर्म का नाश हो प्राणियों में सद्भावना हो विश्व का कल्याण हो। भारत अखण्ड हो गोवध बंद हो इतना सार्वभौम और परम सत्य हैं कि जब तक देश में गोवध बन्द नहीं होगा, और भारत अखण्ड नहीं होगा शान्ति असम्भव है इसको ध्यान में रखकर जेल से छूटने के बाद पूज्य गुरुदेव ने गोवध बन्दी को एक मात्र लक्ष्य बनाकर देशव्यापी दौरा किया उन्होंने सोचा कि देश में वैष्णव और सन्यासी दो भागों में बटे हुये हैं उनको एकजुट करने के लिए उन्होंने पूज्य स्वामी करपात्री जी महाराज से अयोध्या में चातुर्मास्य कराने की योजना बनायी। मोहन लाल जी का जानकी महल संत सेवा में प्रसिद्ध हो चुका था। जानकी महल का पूर्ण स्वामित्व तो गुरुदेव के ही पास था। उन्होंने मोहन लाल जी को आदेश दिया कि। स्वामी जी की सेवा का पूरा भार तुम्हारे पर रहेगा। मोहन लाल जी ने नम्रता पूर्वक कहा आपकी आज्ञा का पालन यथा शक्ति करने का प्रयास करूँगा।

दूसरे दिन स्वामी जी बस्ती से अयोध्या आने वाले थे। गुरुदेव ने मुझसे कहा तुम स्वामी जी का बस्ती से अयोध्या आते समय उस पार ही घाट पर स्वागत की तैयारी करो अयोध्या के कुछ सन्तजनों को लेकर मैंने श्री करपात्री जी महाराज का भव्य स्वागत किया। मैंने स्वामी जी के अभिन्दन में आचार्य कुमारिल का वह पद्य सुनाया जो आचार्य में आद्य शंकराचार्य के सम्बन्ध में कहा था।

श्रुत्यर्थं धर्म विमुखान्, सुगतान् निहन्तुम।

जातं गुहं भुवि भवन्तमहभनुजाने ॥

आप वेद मार्ग विरोधी बौद्धों का नाश करने के लिए स्वयं साक्षात् शिव पुत्र कार्तिकेय हैं। स्वामी जी उस पद्य को सुनकर हँसते हुवे बोले वे लोग महान् थे। सभी लोग अत्यन्त प्रसन्न मुद्रा में



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



जानकी महल आए। श्री गुरुदेव तथा मोहन लाल जी अयोध्या वासी संतों के साथ स्वामी जी को फूल मालाओं से ढक दिए। दूसरे दिन शास्त्रीय विधान से स्वामी जी ने अपना चातुर्मास्य का कार्यारम्भ किया। श्री गुरुदेव के परम सहयोगी श्री राम पदारथ दास जी जो उस समय जानकी घाट के महंत थे। अपने दलबल के साथ प्रति दिन स्वामीजी का प्रवचन सुनने आते थे। पं० अखिलेश्वर दास जी महाराज तथा अयोध्या के उस समय के अनेक विद्वान् सन्त सभा में आने लगे श्री स्वामी जी ने सभा के प्रारम्भमें श्री राम जय राम जय जय राम का कीर्तन कराया अयोध्या के सन्त इससे बहुत प्रभावित हुवे। श्री स्वामी जी श्री राम कथा के अपूर्व वक्ता थे। उनकी कथा का प्रभाव अयोध्या के सन्तों पर बहुत अच्छा पड़ा कुछ दिनों के बाद श्री गुरुदेव ने कहा— महाराज अब आप श्रीमद्भागवत का रसास्वादन भी यहाँ के सन्तों को करावें। श्री करपात्री जी महाराज रास पंचाध्यायी के अपूर्व वक्ता थे। जो उनकी कथा सुने होंगे उनको ज्ञात होगा कि जिस समय स्वामी जी श्रीमद्भागवत की कथा कहते थे उस समय शान्ति छा जाती थी।

प्रतिदिन कथा के बाद श्री गुरुदेव सन्तो मिलने का आग्रह करते रहते थे। इससे 9 माह के अन्दर पूरी अयोध्या स्वामी जी से परिचित हो गयी। श्री करपात्री जी ने उस परिचय का लाभ अपने धर्मसंघ के प्रचार प्रसार में भरपूर किया। धर्म संघ की स्थापना हो चुकी थी उसके तत्वावधान में श्री अखिल भारत वर्षीय गोरक्षा अभियान समिति की स्थापना हुई। श्री स्वामी जी ने कलकत्ता में श्री गुरुदेव को गोरक्षा अभियान के प्रधान सेनापति के पद पर शास्त्रीय पद्धति से अभिषिक्त कर उनको प्रधान सेनापति का पद प्रदान किया। प्रधान सेनापति बनने के बाद गुरुदेव ने गोबध बन्द कराने के उद्देश्य से प्रचार करने के लिए पूरे देश का दौरा किया। धर्म संघ का तीसरा वार्षिक अधिवेशन बिहार में देबवा नरहना में पं० निरीक्षण पति के नेतृत्व में हुआ उसमें स्वामी करपात्री जी ने भारवर्ष के प्रकाण्ड विद्वानों शंकराचार्यों तथा अनेक उपदेशकों को आमन्त्रित किया। उसमें एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के आचार्य काशी के अत्यन्त लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान् बनाये गये। यज्ञ के यजमान के लिए स्वामी जी ने पूज्य गुरुदेव का नाम रखा। पूज्य गुरुदेव के ऊपर सभा संचालन का भी भार रहता था। गुरुदेव ने दोनों कार्यो को बड़ी निष्ठा से पूर्ण किया। उनकी इस कार्य कुशलता को देखकर द्वारिका पीठाधीश्वर श्री अभिनव सच्चिदानन्द तीर्थ जी ने गुरुदेव को साधु रत्न की उपाधि से विभूषित किया। यज्ञ के पूर्ण हो जाने पर उसी दिन रात में गुरुदेव ने कुछ वस्त्र और रुपये हमको देकर आचार्य जी के पास चलने को कहा।

रात के समय यज्ञाचार्य जी विश्राम कर रहे थे। उनका सेवक छात्र जाकर आचार्य जी को श्री गुरुदेव के आने की सूचना दिया। यज्ञाचार्य जी बड़े प्रेम से श्री गुरुदेव को अपने आसन पर बैठाने का प्रयास करते रहे परन्तु श्री गुरुदेव ने कहा नहीं मैं तो आपका यजमान हूँ वहाँ बैठना ठीक नहीं है परन्तु यज्ञाचार्य गुरुदेव को अपने आसन पर बैठाते हुवे बोले अब आप यजमान नहीं हैं हमारे पूज्य सन्त हैं।

श्री गुरुदेव ने कहा— यजमान की ओर से एक यह तुच्छ भेंट है इसको आप अवश्य स्वीकार करें। यज्ञाचार्य जी ने कहा महाराज यहाँ हमको बहुत कुछ मिल गया है। अभी गाँव से एक लड़का आया है उसने बताया एक मुकदमा जो वर्षों से चल रहा था कल उसमें हमारी जीत हो गयी है। उसमें हमको काफी सम्पत्ति प्राप्त हुई है गुरुदेव ने कहा यह तो आपको लेना ही पड़ेगा। यज्ञाचार्य जी ने कहा यह आपका प्रसाद है मैं शिरोधार्य करता हूँ परन्तु आप से एक याचना करता हूँ आप आशीर्वाद दें कि हमको अब यज्ञों में आप जैसे ही निष्ठवान यजमान



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



मिलें। महाराज आपके साथ भगवान् के पूजन में जो आनन्द हमको मिला वह आज तक किसी यज्ञ में नहीं मिला था। आप तो देव पूजन में ऐसे तन्मय हो जाते थे जैसे देवता साक्षात् आपके सामने बैठे हों धर्मसंघ के प्रचार-प्रसार में कीर्तिमान स्थापित किया श्री करपात्री जी महारा गुरु पर बड़ा विश्वास करते थे। अपने सभी कार्यों में श्री स्वामीजी श्री अवश्य परामर्श करते थे। अखिल भारतीय परिषद् जिसकी स्थापना कलकता में हुई थी और जिसका उद्देश्य संस्कृत को राष्ट्रभाषा बनाने का था श्री गुरुदेव उसके संचालक मण्डल में थे।

छपरा के पं० कपिलदेव जी तथा पं० रामलगन जी ने उसका बड़ा विशाल सम्मेलन किया जिसका उद्घाटन १० भरत मिश्र जी ने किया था। नेता श्री सुभाष चन्द्र जी के गुरु श्री मतिलाल राय ने कलकता के पास चन्द्र नगर में देवभाषा परिषद् का अधिवेशन अपने प्रवर्तक संघ के विशाल पाण्डाल में कराया। उसमें उत्तर प्रदेश के अनेक विद्वान् भाग लेने पहुँचे काशी के कई प्रतिष्ठित विद्वानों ने भाग लिया। श्री गुरुदेव उस सभा के मुख्य अतिथि थे प्रवर्तक संघ की व्यवस्था बड़ी सुन्दर थी वहाँ के लोगों का सेवा भाव प्रशंसनीय था। रात में वहाँ के लोगों ने एक नाटक का आयोजन किया नाटक श्री राम के बनवास के प्रसंग पर आधारित था। नाटक संस्कृत भाषा में खेला गया था। पात्रों की सज्जा इतनी अपूर्व थी कि जनता भाव विभोर होकर रात भर बैठी रह गई। बीच में कहीं हिन्दी का बैंगला में कोई संवाद नहीं हुआ सभी पात्र सहज भाव से संस्कृत में ही कथोपकथन करते थे और जनता बड़ी सरलता से सगा लेती थी। अन्त में मुख्य अतिथि के रूप में श्री गुरुदेव का भाषण अत्यन्त सरल तथा सुध संस्कृत में हुआ जिसकी नहीं के लोगों ने बहुत प्रशंसा की।

अखिल भारतवर्षीय श्री राम चरित मानस सम्मेलन की स्थापना भी विन्दु जी ने की उसमें संचालक मण्डल में श्री गुरुदेव प्रमुख थे। चाराणसी के पं० नागेश जी उपाध्याय उसके महामंत्री थे। उसकी एक शाखा काशी में स्थापित हुई जिसका अधिवेशन श्री भदोलाल जी की छत पर होता था। उसमें प्रवेश करने के लिए विशेष पास की व्यवस्था होती थी जिससे सभा में अव्यवस्था न हो।

राम चरित मानस का एक अधिवेशन कलकता में हुवा जिसका सभपतित्व पूज्य बाबा राघवदास जी में क्रिया। रघुनाथपुर आरा के सम्मेलन का उद्घाटन पूज्य गुरुदेवने किया उस सम्मेलन का उद्देश्य श्री रामचरित मानस के प्रचार प्रसार के साथ व्यासों का एक संगठित मञ्च बनाना था। उस सम्मेलन ने मानस शास्त्री हाथरस तथा आगरा के श्री निवास को देश में वक्ता के रूप में प्रदान किया। मुझको भी श्रीराम कथा कहने की प्रेरणा काशी शाखा में गोस्वामी विन्दु जी ने दी उन्होंने गुरुदेव से कहा महेन्द्र को मेरे इस कार्य के लिए विशेष आज्ञा दें गुरुदेव भी विन्दु जी का बड़ा आदर करते थे, और गोस्वामी जी बराबर वरहज का कार्यक्रम सहर्ष स्वीकार करते थे। गोस्वामी विन्दु जी को सामान्य लोग आमंत्रित करने से डरते थे। भारतवर्ष के प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू की इच्छा ह कि श्री गोस्वामी जी की कथा राष्ट्रपति भवन में हो। राजेन्द्र बाबू से गुरुदेव का बड़ा मधुर संबन्ध था उन्होंने गुरुदेव से गोस्वामी जी को दिल्ली भेजने का आग्रह किया। श्री गुरुदेव ने कहा— गोस्वामी जी तुमको बहुत मानते हैं तुम ही उनके पास पत्र लिखो। मैंने बड़े उत्साह से गोस्वामी जी से दिल्ली जाने का अनुरोध किया परन्तु गोस्वामी जी ने मुझे लिखा। श्री राजेन्द्र बाबू एक उत्तम पुरुष हैं उनका निमंत्रण शिरोधार्य है परन्तु कथा उनके घर पर हो तो मैं बिना दक्षिणा लिए वहाँ जाने को तैयार हूँ परन्तु राष्ट्रपति भवन में मेरी कथा का आग्रह न करो सोचो मोको कहाँ स्वीकारी सो काम यह सूरदास जी को



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



का पद्य लिखकर भेज दिया। पूज्य गुरुदेव ने कहा मुझे पहले ही से ज्ञात था, कि वे स्वाभिमानी व्यक्ति हैं, इसलिए पत्र मैंने तुमको लिखने को कहा था।

पूज्य गुरुदेव का नित्य कर्म बड़ा नियमित था वे प्रातः काल ब्राह्म वेला में उठकर सूर्यार्घ्य देकर गायत्री जप करने के बाद ही अन्य कार्य करते थे। प्रायः 12 बजे दिन तक रामायण गीता तथा श्रीमद्भागवत पारायण के साथ नाम जप का क्रम चलता था। 24 लाख गायत्री मंत्र का गुरुदेव ने पुश्चरण हनुमत् निवास में किया था। गायत्री मंत्र के जप के प्रति वे बहुत निष्ठावान् थे ब्राह्मणों को गायत्री मंत्र के जप के साथ साथ नाम जप का भी उपदेश बराबर करते रहते थे प्रति मङ्गलवार को श्रीगुरुदेव हनुमान् 'जी की विशेष पूजा स्वयं करते थे और उसमें हवन और रामायण पाठ का विशेष नियम निष्ठा पूर्वक चलाते थे आज भी मङ्गलवार का यह पूजन आश्रम में पूर्ववत् चलता है।

4 बजे सायंकाल हनुमत् निवास में सत्संग का आयोजन होता था। जिसमें प्रतिदिन कथा होती थी मङ्गलवार की रात में हनुमत् निवास में कीर्तन भजन का विशेष आयोजन होता था। जिसमें पं० नन्दकुमार पाठक जी जो संगीताचार्य के साथ व्याकरणाचार्य भी थे अवश्य भाग लेते थे। कामता प्रसाद वर्णवाल रोज रात में ८ बजे अपने घर के सामने सड़क पर आकर बड़े प्रेम से श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हैं नाथ नारायण वासुदेव मधुरकण्ठ से गाया करते थे जिससे वातावरण अत्यन्त सुहावना हो जाता था। श्री गुरुदेव के प्रयास से उस समय गाँव गाँव में कीर्तन मण्डल बन गए थे वरहज की कीर्तन मण्डली एक बार अखिल भा० रूपकला कीर्तन सम्मेलन में पुरस्कृत भी हुई। श्री कृष्ण इण्टर कालेज के धर्मघण्टा में उन्होंने सप्ताह में एक दिन अध्यापको और बच्चों से बोलने का क्रम प्रारम्भ किया उसका फल यह हुआ कि विद्यालय के अनेक लड़के योग्य वक्ता हो गए संस्कृत के श्लोकों का सुनना उनको इतना अच्छा लगता था कि दिन में कई बार यह कार्यक्रम कराते रहते थे इससे आश्रम के लोगों में संस्कृत के प्रति विशेष आदर भाव बढ़ गया। कांग्रेस से अलग होकर आचार्य नरेन्द्रदेव ने चुनाव लड़ने की योजना बनायी और चुनाव फैजाबाद से लड़ने का निश्चय कर उन्होंने तैयारी प्रारम्भ कर दी। पं० गोविन्द वृल्लभ पंत ने श्री किदवई जी को वरहज में जाकर पूज्या बाबा राघवदास जी से चुनाव लड़ने का आग्रह करने को कहा पूज्य बाबा पहले तो बहुत भागे परन्तु जब किदवई ने कहा महाराज आपको छोड़कर ऐसा कौन है जो नरेन्द्र देव से फैजाबाद में लड़ेगा अन्त में बाबा ने स्वीकृति प्रदान कर दी। श्री गुरुदेव ने जानकी महल के पास दिव्यकला कुंज के पास एक मन्दिर में कार्यालय बनाकर चुनाव का प्रचार प्रारम्भ कर दिया वरहज से गजानन्द केडिया हीरा पंसारी और अन्य लोग अयोध्या पहुँचे। हम और नरसिंह बाबा श्रृंगारहाट के कार्यालय में मुख्य प्रचारक बने। आचार्य नरेन्द्र देव ने विद्यापीठ में लड़कों को बुलाया अयोध्या में चुनाव का बड़ा मनोरंजक दृश्य उपस्थित हो गया। कोई किसी की निन्दा नहीं करता था इससे वातावरण शान्त और सौहार्दपूर्ण बना रहा पूज्य बाबाजी विजयी घोषित हुवे हम सभी लोग विजय के उल्लास में मग्न थे श्री रामपदारथ दास जी गुरुदेव से कुछ बातें कर रहे थे उसी समय परमहंस रामचन्द्र दास जी आए और हमसे बोले। कहो भतीजे जीत में हमको भी कुछ मिलना चाहिए मैंने कहा—चाचा जी जो कहें सेवक आज्ञा पालन करने को तैयार ह। परमहंस जी भी वेदान्ती जी से बोले महाराज बाबा राघवदास की जीत के उपलक्ष्य में बावरी मस्जिद का कलंक मिटना चाहिए अब इनसे बड़ा कौन नेता हमको मिलेगा जो इस कार्य को कर सकेगा। थोड़ा विचार विमर्श करके अन्त में यह निश्चित किया गया कि मस्जिद के आगे जहाँ भगवान् की मूर्ति छोटे मन्दिर



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



में है वहाँ अखण्ड कीर्तन का आयोजन इस संकल्प से किया जाय कि भगवान् इस कलंक को मिटावें।

बाबा जी की जीत से अयोध्या में साधु सन्तों में नयी चेतना आ गई थी लोग बड़े उत्साह से अखण्ड कीर्तन में भाग लेने लगे। वहाँ भीड़ को देखकर सरकार ने मस्जिद की रक्षा के लिए पुलिस की एक टुकड़ी नियुक्त कर दी थी अचानक एक दिन लोगों ने देखा कि मस्जिद के भीतर भगवान् श्रीराम माता जानकी जी के साथ वहाँ विराजमान है। यह समाचार बड़ी तेजी से फैला और अयोध्या तथा अन्य स्थानों से श्रद्धालु भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ी मूर्तियों के सम्बन्ध में कुछ लोग कहते थे भगवान् स्वयं प्रगट हो गये हैं, और कुछ लोग कहते थे, ऐसा नहीं है किसी ने मूर्तियों को रात में रख दिया है। मूर्तियों की पूजा अर्चना प्रारम्भ हो गई थोड़ी देर पूजा के बाद फिर वह स्थान बन्द हो जाता था लोग बाहर से दर्शन करते थे। उस समय पत्रों में लोगों ने अपने अपने को विचार प्रगट करना प्रारम्भ कर दिया था।

महात्मा गाँधी के प्रमुख पत्र हरिजन सेवक में प्रसिद्ध गांधी वादी लेखक मश्रूवाला में लिखा कि बाबा राघवदास उत्तर भारत में एक विशाल मठ के महंत हैं यह कार्य उन्होंने ही करवाया है।

उस समय गोरखपुर के एक मुसलमान लेखक ने बड़े जोरदार शब्दों में मनुबाला का विरोध करते हुये लिखा कि जब आपको यह भी ज्ञात नहीं है। कि परमहंसाश्रम कोई मठ नहीं है और वहाँ कोई सम्पत्ति नहीं है तो बाबा जी के बारे में आपको कुछ ज्ञात नहीं है। बाबा जी हिन्दू मुसलमान का भेद नहीं सह सकते उनके साथ बात कोई कर भी नहीं सकता है वाद विवाह, 9 मस्जिद के सामने कीर्तन होता रहा लोग दर्शन और शान्त भाव से चले जाते। एक दिन सरकारी आदेश से ताला भी खुल गया, और जिस मस्जिद की रक्षा बही सावधानी से हो रही थी धराशायी हो गयी और बाद में वह कलंक भी मिट गया जिसके लिए अगणित हिन्दुओं का बलिदान पहले हो चुका था। भगवान् की कृपा हो गई और भगवान् ने स्वयं अपने नाम की मर्यादा वचायी।

पूज्य बाबा राघवदास जी महाराज की कार्य शैली विलक्षण थी। श्री योगिराज अनन्त महाप्रभु की गुफा से बाहर आने के बाद वरहज में सरयू तट पर विशाल श्री विष्णु महायज्ञ का आयोजन करने के बाद परशुराम धाम सौहनाग में रुद्र महायज्ञ का भव्य आयोजन हुवा। प्रशुराम चण्डिका वेद विद्यालय की स्थापना के साथ पैकौली में वेद विद्यालय की स्थापना हुई। कुशीनगर लोगों ने आना जाना छोड़ दिया था वहाँ कोई जल इसलिए नहीं पीता था कि वह बौद्ध स्थान है वहाँ बाबा ने सबसे पहले एक कुँ से जल लेकर पीने के बाद उपस्थित लोगों से उस स्थान पर आकर महात्मा बुद्ध के दर्शन का आग्रह किया। पहले वहाँ ↑ एक प्राथमिक विद्यालय खुला जो आज स्नातकोत्तर महाविद्यालय के रूप में है। बाबा अनेक महाविद्यालयों को खोलकर उनके संचालन का भार गुरुदेव को सौंपकर विनोवा भावे द्वारा संचालित भूदान यज्ञ में सम्मिलित हो गए। विनोवा बाबा को पाकर निहाल हो गए। थोड़े ही दिनों में बाबा ने उत्तर प्रदेश और विहार का दौरा पूरा किया बाबा के अथक प्रयास को देखकर विनोवा ने कहा—बाबा राघवदास भूदान यज्ञ के हनुमान हैं। बाबा विना विश्राम के निरन्तर यात्रा करने से थक गए थे गुरुदेव ने एक पत्र लिखकर विनोवा भावे से आग्रह किया कि आप बाबा को कुछ दिनों तक विश्राम करने की सलाह दें। इस समय बाबा बहुत दुर्बल हो गए हैं परन्तु विनोवा भावे ने लिखा बाबा इस समय बहुत आनन्द से हैं चिन्ता न करें बाबा यात्रा करते हुवे मध्य प्रदेश में सिवनी पहुँचे। सिवनी में बाबा रानी लीला भार्गव के पिता के पास ठहरे हुवे थे।



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



वह परिवार बहुत सम्पन्न और साधु सेवी था। बाबा की दृशा देखकर वे लोग बहुत चिन्तित हुए और बाबा से औषध लेने के लिए बड़ा आग्रह किये परन्तु बाबा ने कहा मुझे आप केवल विश्राम करने दें चिन्ता छोड़कर भगवान् का स्मरण करें। माघ कृष्ण एकादशी को उस साल मकर संक्रान्ति थी। भगवान् के उत्तरायण होते ही बाबा ने अपनी इह लीला समाप्त की। सीवनी से बाबा के बीमार, होने का समाचार गुरुदेव को मकर संक्रान्ति के दिन दोपहर में मिला। बाबा सिवनी की यात्रा की तैयारी पूरी करके आश्रम से चल पड़े मैं भी गुरुदेव से बिना पूछे साथ में चलने की इच्छा से गुरुदेव के साथ आश्रम से चल पड़ा। गुरुदेव श्रीकृष्ण इण्टर कालेज के मैदान में आकर रुक गए वे यात्रा में शगुन का विचार बहुत करते थे। मैं खोज रहा था कि कोई नीलकण्ठ पंछी का दर्शन हो तो बाबा को दिखलाकर उनका मन प्रसन्न करूँ परन्तु गुरुदेव ने एक ऐसे आदमी को देखा जो कहीं पास के ही गाँव से संक्रान्ति का सामान पहुँचाकर अपनी सूनी काँवर कंधे में, रखकर सामने आ गया उसको देखकर गुरुदेव पीछे मुड़कर हमसे बोले शास्त्री तुम यहीं रहो मेरे साथ जाने वाले लोग हैं तुम आश्रम की देख-रेख करो। गुरुदेव के जाने के बाद हम भी घर चले आए। दूसरे दिन प्रातः काल पूरे बाजार में यह समाचार फैल गया कि बाबा का स्वर्गवास हो गया सभी अध्यापक आश्रम के मैदान में बैठकर सोचने लगे कि क्या किया जाय। मैंने बिना किसी से कहे देवरिया जाकर तत्कालीन एस०पी० घमण्डी सिंह अर्थ से मिलने का निश्चय किया एस०पी० साहब गुरुदेव के बड़े भक्त थे मुझे देखते ही रोते हुए बोले कैसे आए हो। मैंने कहा गुरुदेव कल सिवनी के लिए यात्रा तो कर चुके हैं परन्तु इस समय सिवनी में आश्रम का कोई नहीं है। यदि आप किसी प्रकार यह पता लगाते कि वहाँ क्या हो रहा है तो हम लोग आगे की बात सोचते। उन्होंने उसी समय वहाँ के डी०एम० से सम्पर्क स्थापित करके हमको बताया कि गुरुदेव वहाँ पहुँच गए हैं और बाबा को प्रयाग लाया जा रहा है।

मैंने आश्रम पर आकर सबको बताया कि गुरुदेव पहुँच गए हैं और ट्रेन से बाबा को लेकर कल प्रातः काल प्रयाग पहुँच जायेंगे। उसी समय ठाकुर उग्रसेन सिंह ने हमसे कहा— आप मेरे साथ प्रयाग चलें हमलोग बाबा को वरहुज लायेंगे मुझे भी यह बात अच्छी लगी आश्रम से कुछ लोग बाजार के लोगों के साथ प्रयाग प्रातः काल पहुँचे। जिस गाड़ी से बाबा का शरीर लाया गया था उसकी प्रयाग के लोगों को पहले सूचना मिल गयी थी। श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन अपने साथ वहाँ के गण्य मान्य लोगों को साथ लेकर स्टेशन पर पहले ही पहुँच गए थे। बाबू श्री प्रकाश जी उस समय राज्यपाल थे वे भी संयोग वश वहाँ पहुँच गए।

बाबा का शरीर प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बर्फ में ढककर रखा गया था। गुरुदेव अत्यन्त उदास भाव से हम लोगों से मिले। बड़ा करुणा पूर्ण दृश्य था सभी लोग फूट फूट कर रो रहे थे उसी समय ठाकुर उग्रसेन ने कहा महाराज जी हम लोग वरहज से बाबा को लेने आए हैं आप कृपया ऐसी व्यवस्था करें बाबा को वरहज के लोग अन्तिम समय में देख लें। मैंने भी गुरुदेव से निवेदन किया कि वरहज के लोग बाबा के अन्तिम दर्शन के लिए व्याकुल हैं। गुरुदेव ने कहा— सभी लोग अपने घर में लोगों को अन्तिम समय में प्रयाग लाते हैं और तुम लोग प्रयाग से घर ले जाने की बात कर रहे हो यह उचित नहीं है, अन्त में राजर्षि टण्डन जी ने बाबा का पार्थिव शरीर हिन्दी साहित्य सम्मेलन के हाल में रखकर वैष्णव पद्धति से संस्कार करके संगम पर ले जाने की व्यवस्था की। बाबा की शव यात्रा भी उनके नाम के समान ही बड़ी विशाल हो गयी। अनेक संभ्रान्त तथा वैष्णव सन्तों ने भाग लिया गुरुदेव ने वैष्णव रीति से बाबा का शरीर संगम के पावन जल में प्रवाहित कर दिया। श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी ने गुरुदेव से



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



कहा बाबा का जैसा परमहंसाश्रम है वैसा ही मेरा स्थान भी है आप कृपया सभी लोगों को साथ लेकर मेरे आश्रम पर चलें शेष कर्म वहीं पूर्ण किया जायेगा।

श्री प्रमुदत्त जी महाराज को बाबा राघवदास जी से बड़ा प्रेम था गुरुदेव मौन हो गए मैंने ब्रह्मचारी जी से कहा महाराज हम लोग वरहज से बाबा को वरहज ले जाने की बात करके आए थे यदि बाबा का कर्म भी यहीं होगा तो हम लोग वरहज वालों को क्या उत्तर दंगे। सभी लोग रोते बिलखते गाड़ी में बैठे गुरुदेव अत्यन्त दुर्बल दिखाई पड़ रहे थे केवल जात न देखन पायऊँ तोही तात न रामहिं सौपेडू मोहीं। यह चौपाइ बार बार रोते हुवे कह रहे थे। बाद में हम सभी लोग यही चौपाई अत्यन्त करुण स्वर में पढ़ते हुवे वरहज स्टेशन पर प्रातः काल पहुँचे।

वरहज स्टेशन पर हजारों की संख्या में शोकाकुल लोग यह जानकर आए थे कि बाबा का शरीर इसी गाड़ी से आ रहा है परन्तु जब उनको ज्ञात हुआ कि बाबा का संगम में जल प्रवाह हो चुका है तब वे लोग प्रयाग से बाबा के शरीर पर चढ़ा हुआ जो फूल लाया गया था। उसी को लेकर—

चलत न देखन पायेऊँ तोहीं, तात न रामहि सौपेहु मोही ।।

इस चौपाई को अत्यन्त करुण स्वर में पढ़ते हुए सरयू तटपर जाकर उस फूल को सरयू नदी में विसर्जित कर आश्रम पर आए।

वरहज बाजार दो दिन पूरा बन्द रखा गया गुरुदेव के पास देहात और बाहर लोगों का आने का ताँता लगा रहा। सभी लोगों ने गुरुदेव से कहा महाराज, बाबा का ब्रह्म भोज उनके नाम के समान ही होना चाहिए वे सबके पिता थे हम सभी लोग उनके ऋण से कभी मुक्त नहीं हो सकते हैं।

सभी लोगों से परामर्श करके श्री गुरुदेव ने वैष्णव पद्धति से बाबा का अन्तिम कर्म पूरा किया लगभग दस हजार ब्राह्मणों के भोजन का प्रबन्ध हुआ और शास्त्रीय विधि से सभी कार्य सम्पन्न हुवे। बाबा के निधन का समाचार सुनकर आचार्य विनोवाभावे ने कहा—कामना हमारी सफलता बाबा राघवदास की बाबा का स्मरण करते समय गोरखनाथ जी का यह पद्य अत्यन्त सटीक लगता है—

श्रुतो मया राघव नाम क्षत्रियः त्रेतायुगे रावण मान मर्दनः।

दृष्टो मया राघव नाम ब्राह्मणः कलौ युगे धर्मयुग प्रवर्तकः ।।



बाबा के निधन का समाचार सुनकर पूना से काकाजी परमहंस राजाराम शरणजी महाराज आये थे जब सभी लोग बाबा का ब्रह्मभोज पूरा होने पर अपने अपने स्थान पर जाने लगे तो काका जी ने पूज्य गुरुदेव से महाराष्ट्र जाने की आज्ञा माँगी श्री गुरुदेव ने बड़े आग्रह से काकाजी को रोक लिया और कहा कि आपके जाने से हमको बड़ा अकेलापन ज्ञात होगा आप कृपया कुछ दिन रुककर जाएँ श्री काका जी गुरुदेव के आग्रह पर रुक गए।

श्री काका जी पूज्य बाबा राघवदास जी महाराज के भाँजे थे पहले भी बहुत वार आ चुके थे उनको आश्रम से बड़ा प्रेम था। पूज्य गुरुदेव ने एक दिन सादे समारोह में उनको अपना उत्तराधिकारी बनाया। आश्रम के सभी लोक काकाजी के उत्तराधिकारी होने से बहुत प्रसन्न हुवे और काका जी ने बड़े उत्साह से सभी कार्यों की देख भाल प्रारम्भ कर दी। आश्रम की सभी संस्थाएँ लगभग स्वावलंबी बन चुकी थीं उनकी देखरेख में अब कोई विशेष कठिनाई नहीं थी। काकाजी साधु पुरुष थे उनका विलक्षण व्यक्तित्व सबको मोह लेता था। मृग के समान



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



बड़े बड़े नेत्र हसमुख चेहरा देखते ही लोग उनकी ओर आकृष्ट हो जाते थे गुरुदेव के साथ आश्रम के कार्यों में काकाजी के योगदान से नया जीवन आ गया। गुरुदेव अपना सारा समय विहार की धार्मिक सभाओं और गो वध बन्दी आन्दोलन में देने लगे। गोरक्षा अभियान के तत्वावधान में एक आन्दोलन विहार में प्रारम्भ हुआ।

गुरुदेव हमको लेकर पटना पहुँचे मैं ही विहार का प्रथम सत्याग्रही चुना गया था। विहार विधान सभा के बहुत से सदस्य गुरुदेव के ऊपर अपार श्रद्धा रखते थे विहार में उस समय पशुपालन विभाग में मंत्री महेशबाबू थे उन्होंने श्री गुरुदेव से कहा महाराज जी आपको कष्ट करने की आवश्यकता नहीं है आज हमको सूचना दे दें कि यदि अमुक तारीख तक गोवध बन्द नहीं हुवा तो हम सत्याग्रह प्रारम्भ कर देंगे श्री गुरुदेव के आदेश से हमने एक सूचना विहार सरकार को भेज दी उत्तर में पशुपालन विभाग से पत्र मिला कि उत्तर प्रदेश में जिस स्वरूप में गोवध बन्दी लागू है उसी स्वरूप में हम भी गोवध बन्दी का कानून शीघ्र बना देंगे। आप कृपया सत्याग्रह का कार्य प्रारम्भ न करें। विहार सरकार से समझौता वार्ता सम्पन्न कर श्री गुरुदेव गर्दनीवारा में अमाँवा की महारानी की कोठी पर लौट आए रात में अचानक उनकी छाती में दर्द हो गया। हम वहाँ के प्रसिद्ध डाक्टर टी०एन० बनर्जी को बुलाने उनके निवास पर गए डॉ० बनर्जी से मैंने कहा मैं जानता हूँ कि रात आप में कहीं जाते नहीं हैं इसी से गुरुदेव से बिना पूछे हम आपको मात्र सूचना देने आये हैं कि इस समय उनकी दशा ठीक नहीं हैं। डॉ० बनर्जी ने कहा मैंने भी बहुत दिनों से महाराज का दर्शन नहीं किया है इसी बहाने दर्शन भी कर लूँगा। डॉ० बनर्जी को देखकर गुरुदेव ने कहा महेन्द्र गया था क्या? आपको रात में व्यर्थ का कष्ट हुआ डॉ० बनर्जी ने पूरी जाँच करके हमसे कहा सवेरे तक तो महाराज जी की दशा और बिगड़ जाती बहुत अच्छा किया आपने समय से सूचना दे दी दवा प्रारम्भ करें भगवान् चाहेंगे तो महाराज जी शीघ्र ही स्वस्थ हो जायेंगे। मेरे साथ कृष्णपाली के अंगद जी और पचौंहा का एक सेवक था। पूरे 1 माह के उपचार के बाद गुरुदेव का रोग तो दूर हो गया परन्तु उनकी कमजोरी बहुत बढ़ गई थी। डॉ० बनर्जी ने कहा महाराज अब आप दो माह विश्राम करें दौड़ धूप का काम तो आप छोड़ ही दें पूर्ण स्वस्थ होने में अभी समय लगेगा। गुरुदेव पटना से वरहज आश्रम पर लौट आए। 9 माह तक पं० जगदीश दीन के यहाँ मुख्या में विश्राम करने के बाद गोरखपुर पं० विजय नाथ जी के निवास पर विश्राम के लिए चले गये।

मैरवा में रहते समय एक महात्मा ने गुरुदेव से एक रामायण सम्मेलन कराने का आग्रह किया गुरुदेव ने कहा आप तैयारी करें मैं पूरी सहायता करूँगा। गुरुदेव ने हमसे कहा—मेरा स्वास्थ्य इस समय कुछ ठीक है तुम आज ही बनारस जाकर मैखा के लिए व्यास लोगों को आमन्त्रित कर आवो। गुरुदेव से गोरखपुर जाकर उनका दर्शन कर लोग लौट आते थे। सबसे गुरुदेव यही कहते थे मैं ठीक से हूँ। मेरी चिन्ता मत करो। जिस दिन गुरुदेव ने मुझे बनारस भेजा उस दिन उनके पास केवल चन्द्रदेव शरणजी महाराज रह गए थे।

प्रातः काल गुरुदेव ने मुझे बनारस भेजा मैं शाम को बनारस पं० नागेश जी उपाध्याय के निवास स्थान पर जाकर उनसे मिला कि आप कृपया कुछ व्यास लोगों को आमन्त्रित करके मैरवा का कार्य सम्पन्न करावें उन्होंने कहा कल प्रातः काल यह कार्य कर लिया जायेगा। उस रात को अकेले श्री चन्द्रदेव जी गुरुदेव के साथ थे जैसा श्री चन्द्रदेव जी ने बताया ब्रह्मवेला में गुरुदेव जैसे उठते थे उस दिन भी वेसे ही जगे और स्नानादि से निवृत्त होकर पूजा पर बैठकर माला जपने लगे थोड़ी देर के बाद उनको माला फेरने में कष्ट मालूम हुआ। उन्होंने चन्द्रदेव जी से कहा हमारा हाथ काम नहीं कर रहा है तुम इस माला को पूरा



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



करो गुरुदेव की आज्ञा दशा से श्री चन्द्रदेव जी माला पूरा करने के बाद कहा—माला पूरी हो गयी गुरुदेव ने कहा मुझे घर से बाहर आँगन में ले चलो बाहुर आकर आँगन में श्री सरयू जल का पान कर एक बार श्रीराम कहकर सर्वदा के लिए मौन हो गए।

उनके स्वर्गवास का समाचार सुनकर पूज्य श्री करपात्री जी ने कहा आज हमारी दाहिनी भुजा टूट गई सारा धार्मिक समाज विलख पड़ा उनके अनुयायियों की बड़ी भीड़ गोरखपुर में वहाँ इकट्ठी हो गयी। बनारस में मैं प्रातःकाल व्यास लोगों से मिलने को तैयारी कर रहा था उसी समय श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार ने अत्यन्त करुणा भरे स्वरों में फोन से गुरुदेव के निधन का समाचार हमको दिया। पं० नागेश उपाध्याय के घर पर शोक छा गया और काशी के सभी महाराज जी के प्रेमी लोग वहाँ पहुँचकर हमको सान्त्वना देने लगे गोरखपुर से गुरुदेव का पार्थिव शरीर बरहज लाया गया और वहाँ वैष्णव पद्धति से काका जी ने श्रीसरयू जी में ही जलप्रवाह क्रिया को पूरा किया। पूरा बरहज बाजार बन्द रहा और लोगों का सहयोग श्री काकाजी को इतना मिला कि आगे के सभी विधान शास्त्रीय ढंग से पूर्ण हुए। गुरुदेव की शिष्य मण्डली विहार से भी आ गई थी उन लोगों ने अपनी गुरुभक्ति का अद्भुत परिचय दिया।

पूज्य काकाजी गुरुदेव के सभी कार्यों का संचालन वडी निष्ठा के साथ करते थे। उनका अधिकांश समय कीर्तन भजन में लगा रहता था। श्री अभयराघवमन्दिर के पूजन में और अखण्ड कीर्तन में वे प्रतिदिन अवश्य भाग लेते थे। बाहर तथा स्थानीय भक्तों का आश्रम पर आवागमन पहले के समान ही था। पं० जगदीश दीन उस समय श्री कृष्ण इण्टर कालेज के मैनेजर थे वे सभी कार्य काकाजी से पूछकर ही करते थे। आश्रम की सभी संस्थाएँ पहले के समान ही सुचारु रूप से चलने लगीं।

बरहज नगर के ऊपर सामुदायिक जुर्माना के रूप में जो रुपया सन् १९४२ के समय में दण्ड रूप में लिया गया था उसको पूज्य बाबा राघवदास जी ने सरकार से लेकर सरोजनी कन्या विद्यालय की स्थापना की थी उस समय वह संस्था नयी थी काका जी के विशेष प्रयास से उसमें बड़ी प्रगति हुई।

काका जी असाधारण व्यक्ति थे उनमें पूज्य बाबा राघवदास जी महाराज का खून और गुरुदेव का उत्तराधिकार दोनों समान रूप से विद्यमान थे। उस साल जब अनन्त चतुर्दशी का समय पास आया तो मैंने काका जी ने कहा अनन्त चतुर्दशी का कार्यक्रम पहले से कुछ और आगे बढ़ाना चाहिए उस साल उत्सव बड़े धूम-धाम से मनाया गया। काकाजी का मार्ग दर्शन पाकर आश्रम में नयी चेतना आ गई। पं० जगदीश श्री कृष्ण इण्टर कालेज के नवीन व्यवस्थापक बने थे मैरवा से आकर वे यहाँ का कार्य भार देखते थे। श्री अनन्त चतुर्दशी का उत्सव समीप आ गया था मैंने दीन जी से कहा श्री काका जी का आशीर्वाद लेकर आप यहाँ महा विद्यालय का शुभारम्भ करें भगवान् अवश्य सफलता देंगे दीन जी ने कहा इच्छा तो हमारी भी है परन्तु हम लोगों के पास रुपया कहाँ से आयेगा यह सोचकर कुछ निश्चय नहीं कर पाता हूँ। मैंने काका जी से कहा आपदीन जी को आज्ञा दें वे महाविद्यालय का कार्य प्रारम्भ करें श्री अनन्त चतुर्दशी के दूसरे दिन श्री हनुमान चालीसा के पाठ के बाद मैंने श्री काका जी से निवेदन किया आपदीन जी से अगले वर्ष होने वाले कार्य की सूचना देने की आज्ञा दीजिए। श्री काका जी ने हँसते हुए कहा दीन जी आप पूरे विश्वास से घोषणा करें महाविद्यालय अवश्य बनेगा। काका जी के आदेश के बाद मैंने घोषणा की सज्जनों पं० जगदीशदीन जो इण्टर कालेज के व्यवस्थापक हैं अगले वर्ष के कार्यक्रम की सूचना आपको देने जा रहे हैं। श्री दीन जी ने काका जी को प्रणाम करके कहा मैं काका जी आज्ञा से घोषणा करता हूँ कि अगले वर्ष से हम लोग



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



यहाँ महाविद्यालय का शुभारंभ करेंगे। लोगों ने तालियों की गड़गड़ाहट से चीन जी की घोषणा का समर्थन किया। गुरुदेव के समय यह प्रथा नहीं थी सम्मेलन में केवल कथा प्रवचन और श्री हनुमान चालीसा का पाठ होता था इस वर्ष काकाजी ने यह नया कार्य प्रारम्भ किया जो परम-हंसाश्रम की संस्थाओं की अभिवृद्धि का कारण बना और अल्प काल में ही स्नातकोत्तर महाविद्यालय का रूप धारण कर जनता की सेवा कर रहा है।

भगवान् दास गौड़ गुरुदेव के बड़े प्रिय शिष्य थे। उनको उस साल सीरे में बड़ा लाभ हुआ था। उन्होंने रु० 50000 देकर अपना नाम किसी संस्था से जोड़ने का प्रस्ताव हमसे किया। हमको बड़ा आश्चर्य हुआ मैंने सोचा रु० 50000 देकर जो भगवान् यहाँ उतना बड़ा संकीर्तन सम्मेलन गुरुदेव के समय में कराये थे। मालूम होता है वही भगवान् फिर अपनी माया दिखा रहे हैं। मैंने काकाजी से कहा भगवान् दास जी गुरुदेव के प्रिय शिष्य हैं। उनकी बात अवश्य माननी चाहिए श्री काकाजी ने जगदीश दीन को बुलाकर उनसे भगवान् दास से रुपया लेकर महाविद्यालय का कार्य करने की आज्ञा प्रदान की उस समय श्री कृष्ण इण्टरकालेज के प्राचार्य श्री राजनारायण पाठक थे। उनकी स्वयं डिग्री कालेज बनाने की बड़ी इच्छा थी। परन्तु उसमें रुपये की बाधा सामने आ जाती थी रुपये की व्यवस्था हो जाने पर पं० राजनारायण पाठक ने दौड़-धूप प्रारम्भ कर दी और महाविद्यालय का शुभारंभ हो गया। काकाजी के सहपाठी श्री यशवन्त रावजी उस वर्ष भारतवर्ष के प्रतिरक्षा बने श्री काकाजी ने पाठक जी को साथ लेकर यशवन्त राव से महाविद्यालय के लिए सरकारी सहायता दिलवायी। विद्यालय का कार्य सुचारु रूप से चलने लगा।

अगले वर्ष श्री अनन्त चतुर्दशी के दिन मैंने फिर जगदीश दीन से कहा भगवान् आपकी प्रार्थना सुनकर शीघ्र ही पूरा कर देते हैं आप इस साल भी अगले वर्ष के कार्यक्रम की सूचना जनता को दें। जगदीश दीन बचपन से गुरुदेव के साथ रहने वाले भगवान् पर विश्वास करने वाले व्यक्ति थे। उन्होंने कहा सज्जनों ! ये तो शास्त्री हैं मैं तो मिस्त्री हूँ। मिस्त्री को शास्त्री की बात अवश्य माननी चाहिए। इसलिए मैं अगले वर्ष दो नए विषयों में पढ़ाई की व्यवस्था करूँगा इस तरह से यह कार्य प्रतिवर्ष होता रहता था और भगवान् की कृपा से यह कार्य पूरा हो जाता था। पं० जगदीशदीन के मरने के बाद मैं भी बिमार पड़ गया। दो वर्षों तक सम्मेलन में न आ सका इससे सम्मेलन में संस्थाओं के सम्बन्ध में प्रार्थना की प्रथा रुक सी गयी बाद में मेरे आने के बाद भी प्रार्थना का कार्य इसलिए नहीं हो सका कि केवल श्री हनुमान चालीसा के पाठ के बाद मैं थक जाता था। कुछ दिनों के बाद जब मैं कुछ स्वस्थ होकर अनन्त चतुर्दशी के उत्सव में आया उस समय आश्रम के उत्तराधिकारी श्री चन्द्रदेव शरण जी महाराज थे। श्री हनुमान चालीसा पाठ के बाद उनसे मैंने कहा महाराज हमलोग डिग्री कालेज के लिए बहुत प्रार्थना कर चुके हमारा निवेदन है कि हम लोग इस वर्ष संस्कृत महाविद्यालय के लिए प्रार्थना करें श्री चन्द्रदेव शरण जी सभा में दीन जी के समान बोलकर प्रार्थना तो यही किये परन्तु उन्होंने कहा संस्कृत विद्यालय की स्थापना योगिराज ने स्वयं की थी, उसका ध्यान उनको रहता ही होगा। उस साल की प्रार्थना का विलक्षण प्रभाव पड़ा। श्री राजनारायण पाठक ने डिग्री कालेज की सहायता के लिए मुलायम सिंह यादव से सम्पर्क स्थापित किया उन्होंने एक प्रार्थना-पत्र डिग्री कालेज के नाम से और एक प्रार्थना-पत्र संस्कृत महाविद्यालय के नाम से भी दे दिया। भगवान् की कृपा से मुलायम सिंह ने संस्कृत महाविद्यालय को 1 लाख रुपये की स्वीकृति प्रदान कर दी। मुलायम सिंह ने पाठक जी से कहा मैंने आपके डिग्री कालेज को एक लाख दे दिया है। जब संस्कृत महाविद्यालय को 1 लाख रुपये की स्वीकृति मिली तो लोगों को



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने कहा भाई हम लोग प्रार्थना तो संस्कृत महाविद्यालय के लिये किये थे भगवान् ने आपकी प्रार्थना की लाज बचा ली। उस रुपये से संस्कृत महाविद्यालय के पुराने भवन का नवीन स्वरूप सबके सामने आकर इस बात का बार-बार स्मरण करता है कि अनन्त चतुर्दशी महोत्सव कल्पवृक्ष है। श्री अनन्त चतुर्दशी महोत्सव में अगले वर्ष प्रार्थना के समय मेरे सामने फिर यह समस्या आयी इस साल मैंने स्वयं प्रार्थना की मैंने कहा भगवान् की कृपा से सब हमारी संस्थाओं का विस्तार बहुत हो गया है भगवान् इनकी रक्षा करे और सभी संस्थायें सुदृढ़ हों। भगवान् की कृपा से उस साल श्री कृष्ण इण्टर कालेज के जीर्णोद्धार का कार्य बड़े वेग से प्रारम्भ हुआ भी केदारनाथ यादव ने उस कार्य को पूरे मनोयोग से पूरा किया भगवान् की कृपा होगी तो यह कार्य आगे भी चलता रहेगा।

अगले वर्ष फिर अनन्त चतुर्दशी आयी मैंने इस बार बड़े आग्रह से श्री राजनारायण पाठक को बुलाकर कहा इस बार तुमको ही प्रार्थना करनी है मैंने कहा सज्जनों अब श्री राजनारायण पाठक अगले वर्ष के कार्य की घोषणा करेंगे। पाठक जी ने कहा भगवान् की कृपा होगी तो इस लोग अगले वर्ष कन्या महाविद्यालय का शुभारंभ करेंगे। भगवान् ने प्रार्थना सुन ली कन्या विद्यालय का शुभारंभ हो गया और वह प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहा है।

जिस कल्पवृक्ष को पूज्य गुरुदेव लगाया था उसी से फल लेने की विधि पूज्य काका जी ने श्री हनुमान चालीसा पाठ के बाद प्रार्थना के द्वारा प्राप्त करने की विधि विकसित कर जनता का महान् उपकार किया। बिहार में गुरुदेव शिष्यों की संख्या बहुत है मुजफ्फरपुर जिले के महुवा के पं० जगतनारायण तिवारी तथा सेठ अजबलाल के सहयोग से जो गुरुदेव की प्रतिमा महावीर मन्दिर में स्थापित हुई उसका अनावरण श्री काका जी ने किया। गडेर में भगवान् शंकर जी की प्रतिमा की स्थापना भी काका जी के कर कमलों से सम्पन्न हुई। श्री गुरुदेव की जयन्ती जो वसंत पंचमी को मनायी जाती है उसका शुभारंभ भी काका जी ने ही किया जो निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। श्री काका जी को श्रीमद्भगवत् पारायण का बड़ा अभ्यास था। वे निरन्तर श्री मद्भगवत् का पारायण किया करते थे। श्री काकाजी ने अपना पूरा जीवन आश्रम को समर्पित कर दिया। गुरुदेव की अन्तिम अभिलाषा भैरवा में श्रीरामायण सम्मेलन कराने की थी मैंने दीनजी से कहा भाई गुरु का ऋण हमलोगों के ऊपर है वहाँ सम्मेलन अवश्य होना चाहिए। दीनजी ने हमसे कहा आप रुपये की चिन्ता छोड़कर सम्मेलन की तैयारी करें। भगवान् की कृपा से भैरवा सम्मेलन में काशी के व्यासों का पूर्ण सहयोग मिला और पूर्ण सफल हुआ।

भगवान् की कृपा से प्रति वर्ष रामायण सम्मेलन की परम्परा भी उसके बाद प्रारम्भ हो गयी, और अब वह श्रीयोगिराज अनन्त महाप्रभु की स्मृति दिवस के रूप में मनाया जाता है। श्री गुरुदेव द्वारा स्थापित अनन्त चतुर्दशी महोत्सव बिहार तथा उत्तर प्रदेश में अनेक स्थानों पर रामायण सम्मेलनों की प्रेरणा प्रदान करता हुआ, चिरकाल तक धार्मिक जगत को सम्बल प्रदान करता रहे, यही भगवान् से प्रार्थना है।

गुरुदेव सिद्ध पुरुष थे उनको अपने शिष्यों की चिन्ता माता के समान रहती थी। मैंने अपने जीवन काल में कई बार उसका अनुभव किया उसमें से केवल दो घटनाओं का वर्णन करता हूँ। गुरुदेव हमको साथ लेकर भटनी जंक्शन पर आकर पास में एक कुटी पर जिसमें पं० मुनेश्वर जी महंत थे पहुँचे। वहाँ आकर गुरुदेव ने एक काम से हमको भाटपार जाने की आज्ञा दी मैं जाकर गाड़ी में बैठगया थोड़ी देर बाद एक आदमी आकर हमसे कहा यह रेल के मजदूरों की गाड़ी है बड़ी गन्दगी है यहाँ आप आगे जाकर बैठ लें अभी गाड़ी में बड़ी



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री



देर है वह वरौनी जाने वाली पैसेंजर गाडी थी उसका इंजन अभी पानी लेने गया था। मैं उस आदमी की बात मानकर ज्यों ही उस डब्बे से उतरकर आगे जाकर बैठा त्यों ही उसी लाइन पर गोरखपुर से बनारस जाने वाली गाड़ी आकर उसे टक्कर मारी और पीछे के दो डब्बों को रौंदती हुई आगे बढ़ गई। मैं जिस डब्बे में बैठा था उसमें सभी लोग मारे गये थे। थोड़ी देर बाद गुरुदेव ने हमको खोजने के लिए वहाँ से चार आदमियों को भेजा वे लोग हमको देखकर बहुत प्रसन्न हुये और हमको गुरुदेव के पास ले गये वहाँ जब मैंने यह कथा गुरुदेव से सुनायी तो उन्होंने कहा भगवान् ने आज तुम्हारी रक्षा की है। एकबार गुरुदेव के परम पद प्राप्त होने के बाद हम काशी में श्रीसंकट मोचन हनुमान जी का दर्शन करने गए दर्शन करके लौटते समय हमारे मन में अचानक यह भाव आया कि जब मैं गुरुदेव के साथ आया था तो इसी स्थान पर गुरुदेव साथ मेरा कितना सम्मान होता था, प्रसाद और माला से मेरा मन भर जाता था। आज किसी ने हमसे समाचार तक नहीं पूछा यह मैं सोच ही रहा था। उसी समय एक सज्जन ने आकर हमसे पूछा शास्त्री जी यहाँ कब आए हमने कहा अभी आया हूँ उन्होंने कहा— चलिए श्री हनुमान जी का दर्शन किया जाय मैंने कहा पण्डित जी मैं दर्शन करके ही आ रहा हूँ। उन्होंने कहा— अरे आइये वहाँ आपको भीड़ में कोई पहचान नहीं पाया होगा। यह कहते हुये मुझे पुनः दर्शन कराने के लिए श्री हनुमान जी के सामने लाकर पुजारी जी से कहा पुजारी जी ये वरहज के शास्त्री जी है, पुजारी जी सुनते ही हंसते हुये वे मेरे सिर पर हनुमान जी की रोरी लगाते हुये हाथ में प्रसाद और माला देकर बोले, आप इस बार बहुत दिनों के बाद आए आपको बराबर आना चाहिए। मैंने पुजारी जी को नमस्कार करते हुये कहा आपकी कृपा होगी तो अवश्य आऊँगा।

उस घटना के थोड़े ही दिनों के बाद एकदिन श्री कृपा नारायण जी हमको लेकर श्री महंत जी महाराज के 'आवास' पर गए। श्री महंत जी से ने कहा— श्री महाराज जी के न रहने से मेरा एक काम रुक गया। मैंने सोचा था श्री संकट मोचन जी के स्थान पर एक सम्मेलन कराऊँ परन्तु श्रीमहाराज के न रहने से कुछ निश्चय नहीं कर पाता हूँ।

श्री कृपा नारायण जी महंत जी के साथ विश्व विद्यालय में पढ़ा चुके थे उनसे उनका बड़ा प्रेम भाव था। उन्होंने कहा आप सम्मेलन का कार्य प्रारम्भ करे श्री महाराजजी के स्थान पर हम शास्त्री जी को लेकर आयेगें।

भगवान् की कृपा से सम्मेलन प्रारम्भ हुआ और जिस सम्मान के लिए एकदिन मैं संकट मोचन जी के स्थान पर दुःखी था वह निरन्तर ३३ वर्षों तक मुझे मिलता रहा। इन घटनाओं को सोचता हूँ तो मन में बड़ा आनन्द आ जाता है, और गुरुदेव का साक्षात् दर्शन का सुख मिलने लगता है।

सन्त की परिभाषा बहुत लोगों ने अपने अपने विचार से की है गोस्वामी तुलसीदास जी ने—

जो सहि दुपर छिद्र दुरावा।

वन्दनीय तेई जगयशपावा ॥

के अनुसार बाबा राघवदास जी महाराज का तथा—

राम भगति जँह सुरसरि धारा।

सरसइ ब्रह्म बिचार प्रचारा ॥

विधि निषेधमय कलि मलहरनी।

कर्म कथा रविनन्दिनी वरनी ॥



शास्त्री जी के पुत्र सम्माननीय संतोश कुमार पाण्डेय (जज) अपनी धर्मपत्नी के साथ



सम्पदा न्यूज और आचार्य महेन्द्र शास्त्री

के अनुसार गुरुदेव का पावन जीवन था। इन दोनों महापुरुषों के जीवन को देखकर महाराज भतृहरि का यह कथन अक्षरशः चरितार्थ होता है—

कि “तेन हेमगिरिणा रजतद्रिणा वा यत्राश्रिताः हि तरवः तखस्त एव मन्या महे मलय मेव यषात्रयेण कंकोल बिम्ब कुटनाः अपि चन्दनाः स्युः ॥”

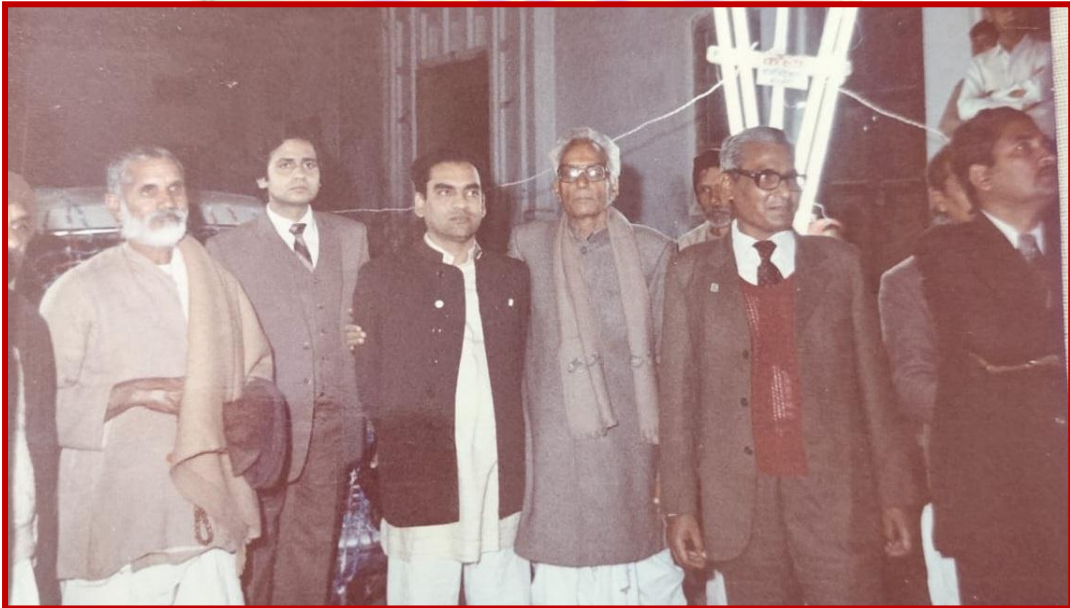
उन सोने चांदी के पहाड़ों से क्या लाभ जहाँ जो पेड़ जिस रूप में पैदा होता है जीवन भर उसी रूप में रह जाता है संसार में प्रशंसा का पात्र तो मलयाचल है, जहाँ पैदा हुआ कंकोल नीम कुटज आदि तुच्छ वृक्ष भी चन्दन हो जाते हैं। भारत का सबसे पिछड़ा भाग पूर्वांचल आज हन संतो की कृपा से हर क्षेत्र में चन्दन के समान सुरभि बिखेर रहा है। गुरुदेव तो बाबा राघवदास के लिए —

रघुपति कीरति विमल पताका।

दण्ड समान भयउ जस जाका ॥

के मूर्तिमान स्वरूप थे। उनका यश वर्णन करते समय अपने सौभाग्य पर हर्षित हुआ भगवान् से यही प्रार्थना करता हूँ कि मेरा प्रेम निरन्तर गुरुचरणों में बढ़ता रहे।

दिनांक— 15-03-2000



आचार्य महेन्द्र शास्त्री आश्रम पीठाधीश्वर श्री चन्द्रदेव शरण जी महाराज के साथ